भूमिका

अश्वघोष

'बुद्धचरितम्' के प्रत्येक सर्ग के अन्त में "इति श्री बुद्धचरिते महाकाव्ये"—इस प्रकार के शब्द मिलते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि बुद्धचरित महाकाव्य है। इसके रचयिता अश्वघोष के विषय में यद्यपि विद्वानों ने बहुत कुछ अनुसन्धान किया, तथापि उसके जीवनचरित का कोई इतिहास नहीं मिलता। अश्वघोष कब हुए—इसका ठीक ठीक पता नहीं।

मिस्टर बील ने अपनी पुस्तक "संस्कृत बुक्स ऑफ़ दि ईस्ट" की उन्नीसवीं जिल्द की भूमिका में लिखा है कि अश्वघोष नाम के तीन व्यक्ति हो गए हैं—ज्येष्ठ अश्वघोष, कनिष्ठ अश्वघोष, और आठवीं शताब्दी वाले अश्वघोष।

"बुद्धचरितम्" के रचयिता आठवीं शताब्दी वाले अश्वघोष नहीं हो सकते, क्योंकि इस ग्रन्थ का एक अनुवाद चीनी भाषा में पाँचवीं शताब्दी में हुआ था। इसका प्रमाण हेनसांग और इत्सिङ्ग के लेखों में मिलता है। रह गए दो अश्वघोष।

कनिष्ठ अश्वघोष इस ग्रन्थ के रचयिता नहीं हैं। तो निस
ज्येष्ठ अश्वघोष ही बुद्धचरितम् के रचयिता हैं। अश
वास्तव में ब्राह्मण थे, परन्तु वसुमित्र ने उन्हें बौद्ध बना लि
वह काश्मीर में रहने लगे और बारहवें बौद्धगुरु
गए। वह सोथियन राजा कनिष्क के समकालीन थे
कई स्थलों पर इस बात का लेख मिलता है कि वह कनिष्क
आचार्य थे।

बुद्धचरितम् की शैली

श्री कृष्णमाचार्य का कथन है कि अश्वघोष की शै
नितान्त सुगम है और जिस प्रकार के आडम्बर पीछे के ग्रन
में मिलते हैं उनका इसमें सर्वथा अभाव है। प्रोफेसर कोवे
का कथन है कि अश्वघोष की शैली भद्दी और दुरूह
परन्तु उसमें मौलिक शक्ति और सौन्दर्य है। उनके पर्या
दुर्बोध नहीं हैं। वे कथावस्तु से ही अनुमेय हैं, और नैसर्गि
मंजरी की तरह कथावस्तु से ही प्रादुर्भूत होते हैं।

परन्तु कालिदास जैसी मनोहारिणी शैली अश्वघोष की
नहीं है। बुद्धचरित की शैली बिल्कुल ठेठ और खुरदरी है,
और बिना तराशे हुए प्रस्तरखण्डों जैसी ऊँची नीची है।
परन्तु कालिदास की शैली सुन्दर गढ़े हुए चिकने संगमरमर
की पट्टियों जैसी है। कालिदास की कविता समझने में पाठक
को घोर परिश्रम अथवा कल्पनाकष्ट की आवश्यकता नहीं
पड़ती। बुद्धचरितम् का अध्ययन करते समय पाठक को
घोर श्रम करना पड़ता है मानों किसी बड़े बड़े कगारों और
ढालों पर से बहने वाले पहाड़ी* स्रोत को पार कर पाठक
अपनी यात्रा पूरी कर रहा हो। कदाचित् इसका कारण यह

हो सकता है कि उस समय तक संस्कृत की कविता शैली का कोई निश्चित रूप नहीं बन पाया था और बौद्ध लेखकों की शैली प्रायः भद्दी और ऊबड़ खाबड़ हुआ करती थी।

बुद्धचरित में उस मनोहारी सौन्दर्य का अभाव है जो कि प्रायः संस्कृत काव्यों में दृष्टिगोचर होता है। सामान्यभूत तथा स्यबन्त का प्रयोग बहुलता से पाया जाता है।

प्रोफेसर कोवेल का कथन है कि चार काव्यों और अत्यन्त रमणीय तीन नाटकों के प्रणेता कालिदास ने बुद्धचरितम् को कदापि अपना आदर्श नहीं माना होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अनेक स्थलों पर ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें दोनों कवियों की शब्दावली और विचार बहुत कुछ मिलते जुलते हैं, पर इससे यह नहीं कहा जा सकता कि कालिदास ने अश्वघोष का अनुकरण किया अथवा अश्वघोष के आदर्श पर अपने ग्रन्थों की रचना की। बुद्धचरितम् के तृतीय सर्ग के १२ से लेकर २४ तक के श्लोक और रघुवंश के सप्तम सर्ग के ५ से लेकर १२ तक के श्लोक बिलकुल मिलते जुलते हैं। इसी प्रकार बुद्धचरितम् के प्रथम सर्ग के श्लोक २७, ३०, ३१, ३४ रघुवंश के दशम सर्ग के ७३ वें श्लोक, चतुर्दश सर्ग के आठवें श्लोक, प्रथम सर्ग के सातवें श्लोक तथा एकादश सर्ग के १७ वें श्लोक से मिलते जुलते हैं—शब्द और वाक्यावली की समता है। और भी अनेक स्थल हैं जहाँ पर दोनों कवियों की विचार-धारा मिलती जुलती हुई है। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि कालिदास ने अश्वघोष का अनुकरण किया है।

बुद्धचरितम् में वर्णन का औचित्य नहीं है। जिन स्थलों पर बहुत उच्चकोटि की नैतिक भावना जागृत की जा सकती थी, उनको कवि ने दो पंक्तियों में वर्णन करके समाप्त कर

दिया है। नायक की माता की मृत्यु का वर्णन इस प्र
किया है मानों वह अत्यन्त साधारण घटना हो। इसके विप
अज के पिता महाराज रघु की मृत्यु का वर्णन पढ़िए—रघु
अष्टम सर्ग—श्लोक २४—३०; कितना गौरवपूर्ण, प्रभावश
और हृदयविदारक वर्णन है।

यद्यपि अश्वघोष का अन्तिम उदय दार्शनिक दृष्टि
बहुत उच्च कोटि का है, तथापि जिस प्रकार की भाषा
उन्होंने दृश्यों और वृत्तान्तों का चित्रण किया है उसमें ग्राम्य
की झलक आ जाती है। अन्ततो गत्वा यही कहना पड़ता
कि बुद्धचरितम् बहुत ही निकृष्ट कोटि का काव्य है।

श्री हनुमते नमः

बुद्धचरितम्

तृतीयः सर्गः

ततः कदाचिन्मृदुशाद्वलानि
पुंस्कोकिलोन्नादितपादपानि ।
शुश्राव पद्माकरमण्डितानि
शीतेन बद्धानि स काननानि ॥ १ ॥

ROSE ORDER :—ततः स कदाचित् मृदुशाद्वलानि पुंस्कोकिलोन्नादितपादपानि पद्माकरमंडितानि शीतेन च बद्धानि काननानि शुश्राव ।

IINDI TRANSLATION :—तब एक बार उन्होंने उन जंगलों के विषय में सुना जिनमें कोमल घासभरे मैदान (लहलहा रहे) थे, कोयलों से शब्दायमान वृक्ष खड़े थे, और जो कमल के सरोवरों से सुशोभित तथा ठंडक से भरे थे ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, once upon a time, he heard of forests which flourished with soft meadows ; in which trees resounded with the cooings of the *Kokilas* ; and which were adorned with pools of lotus and were filled with frost.

PURIORT IN SANSKRIT :—एकदा स राजकुमारः पुरकाननानां शोभामन्तरेण इदं शुश्राव यत् पुरकाननेषु कोमलशष्पयुक्तानि

चैत्राणि विराजन्ते, वृक्षाणामुपरि कोकिलाः मधुरं कू
तानि वनानि कमलदलैः सुशोभितानि शैत्येन च पु
मन्ति

METRE :—उपजाति। अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदी
पजातयस्ताः। उपजाति metre is formed from
combination of the two metres, *viz.*, Indrav
and Upendravajra.

इन्द्रवज्रा

इन्द्रवज्रा consists of 11 syllables in each quarter.
has been defined as स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः, *i.*
each quarter of Indravajra consists of त ग ण, तगण
जगण and two long syllables ; *e. g.*

स्या दि न्द्र—गुरु, गुरु, लघु—तगण
व ज्रा य—गुरु, गुरु, लघु—तगण
दि तौ ज—लघु, गुरु, लघु—जगण
गौ गः—गुरु, गुरु

Thus it may be seen that there is तगण, तगण, ज
गुरु, गुरु, in each quarter of इन्द्रवज्रा.

उपेन्द्रवज्रा

उपेन्द्रवज्रा also consists of 11 syllables in each qu
er. It has been defined as उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो ग
i. e., each quarter of Upendravajra consists of जगण
तगण, जगण and two long syllables, *e. g.*

उ पे न्द्र—लघु, गुरु, लघु—जगण
व ज्रा—गुरु, गुरु, लघु—तगण
त आ स्त्र—लघु, गुरु, लघु—जगण
ता गौ—गुरु, गुरु,

Thus it may be seen that there is जगण, तगण, जगण, गुरु, गुरु in each quarter of उपेन्द्रवज्रा ।

उपजाति

उपजाति contains the characteristics of Indravajra in some of its quarters, while in others it contains the characteristics of Upendravajra. There is no limitation as to how many and which quarters ought to contain the characteristics of Upendravajra, and how many and which quarters ought to contain the characteristics of Indravajra ; e. g.,

तगण | तगण | जगण | गु गु
मु स्या त | तः स्मी ज | म व ह | मा नौ

(This quarter is that of Indravajra)

जगण | तगण | जगण | गु गु
न नौ ज्ञ | भो व मु | र का म | मा माम्

(This quarter is that of Upendravajra)

जगण | तगण | जगण | गु गु
हिः म | पा या य | घ का र | ब रि

[illegible]

Metre —[illegible] [illegible] metre is formed from the combination of the two metres, viz., Indravajra and Upendravajra.

इन्द्रवज्रा

इन्द्रवज्रा consists of 11 syllables in each quarter. It has been defined as स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः, i. e., each quarter of Indravajra consists of त त ज, ग ग, i.e., तगण, तगण, जगण and two long syllables, e. g.

स्या द्रि न्द्र—गुरु, गुरु, लघु—तगण
व ज्रा य—गुरु, गुरु, लघु—तगण
दि तौ ज—लघु, गुरु, लघु—जगण
गौ गः—गुरु, गुरु

Thus it may be seen that there is तगण, तगण, जगण, गुरु, गुरु, in each quarter of इन्द्रवज्रा.

उपेन्द्रवज्रा

उपेन्द्रवज्रा also consists of 11 syllables in each quarter. It has been defined as उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ, i.e., each quarter of Upendravajra consists of जगण, तगण, जगण and two long syllables

उ पे न्द्र—लघु, गुरु, लघु—जगण
व आ ज—गुरु, गुरु, लघु—तगण
त आ स्त—लघु, गुरु, लघु—जगण
ता गौ—गुरु, गुरु,

Thus it may be seen that there is जगण, तगण, जगण, ुरु, गुरु in each quarter of उपेन्द्रवज्रा ।

उपजाति

उपजाति contains the characteristics of Indravajra n some of its quarters, while in others it contains he characteristics of Upendravajra. There is no imitation as to how many and which quarters ought o contain the characteristics of Upendravajra, and ow many and which quarters ought to contain the characteristics of Indravajra ; *e. g.*,

तगण | तगण | जगण | गु गु
भु स्वा त | तः स्पो अ | न व टि | भा मी

(This quarter is that of Indravajra)

जगण | तगण | जगण | गु गु
म मी ज | भो व ग्यु | र का न | ना माम्

(This quarter is that of Upendravajra)

जगण | तगण | जगण | गु गु
व हिः म | पा दा य | व का र | वु हि

(This quarter is again that of Upendravajra

तगण तगण जगण
मे न्ना ह्रे हे मा न र या वृ ; गु
(This quarter is that of Indravajra)

Thus it can be seen that the first and the quarters of this verse contain the characteristic Indravajra and the second and the third quart contain the characteristics of Upendravajra. There no fixed rule for the order of combination—a quarter may be that of Indravajra, and any may be that of Upendravajra. At any rate, there must nee be the combination of the two metres (Indravaj and Upendravajra) in an Upajati metre.

NOTES.

1. ततः—तदनन्तरम्, अत्र, afterwards, इसके बाद अर्थात् पु पैदा होने के बाद तथा द्वितीय सर्ग में वर्णित घटनाओं बाद, *i. e.*, after the birth of the son and th incidents narrated in Canto II.
2. कदाचित्—एक बार, once upon a time.
3. मृदुशाद्वलजानि—मृदु—कोमल, soft; शाद्वल—शाद means short grass ; शादाः सन्ति अत्र इति शाद्वलम् meaning घासभरा मैदान, meadow, greensward. The formation of the word by the addition of वलच् is by नडशादाड् वलच् (पाणिनि IV. ii, 28). मृदूनि शाद्वलजानि येषु तानि मृदुशाद्वलजानि qualifying

घासभरे मैदान (लहलहा रहे) थे, which flourished with soft greenswards.

पुंस्कोकिलोन्नादितपादपानि—पुमांसश्च ते कोकिलाः इति पुंस्कोकिलाः (कर्मधारय) तैः उन्नादिताः पादपाः (वृक्षाः) येषु तानि (बहुव्रीहि), पुंस्कोकिल—कोयल, *kokil* ; उन्नादित—शब्दित, resounded with ; पादप—वृक्ष, tree. सारे समास का अर्थ हुआ—जिनमें कोयलों से शब्दायमान वृक्ष थे, in which there were trees that resounded with Kokilas.

पद्माकरमंडितानि—पद्माकर means पद्मवनि, कमल का सरोवर, a large tank or pond abounding in lotuses. मंडितानि means भूषितानि, शोभायमान, adorned. पद्माकरैः (पद्मसरोवरैः) मण्डितानि (भूषितानि) इति (तृतीया तत्पुरुष), पद्म के सरोवरों से शोभायमान, adorned with pools of lotus.

शीतेन—शैत्येन, ठंडक से, by cold or frost.

वृतानि—युक्तानि, filled with.

काननानि—वनानि, जंगलों के विषय में, about the forests, *i. e.*, about the merits of the forests, for forests cannot be heard.

श्रुत्वा ततः स्त्रीजनवल्लभानां
मनोज्ञभावं पुरकाननानाम् ।
अरिः प्रयाणाय चकार बुद्धि-
मन्तर्हिते नाग इवावरुद्धः ॥ २ ॥

PROSE ORDER :—ततः स्त्रीजनवल्लभानां पुरकानना मनोज्ञभावं श्रुत्वा [सः] अन्तर्गृहे अवरुद्धः नागः इव बहि प्रयाणाय बुद्धिं चकार ।

HINDI TRANSLATION :—तब, स्त्रियों को प्रिय लगने वा शहरी जंगलों की शोभा के विषय में सुनकर, उन्होंने, घ के अन्दरूनी कमरे में बन्द हाथी के समान, बाहर जा का निश्चय किया ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, having heard of th loveliness of the urban forests which were plea ing to the ladies, he resolved to go out like a elephant, shut up in the inner apartments of house.

PURPORT IN SANSKRIT :—तानि काननानि स्त्रीणामत्यन्तं प्रियाणि आसन् । तेषां सौन्दर्यस्य वर्णनं श्रुत्वा स बहिर्गत्वा भ्रमितुं तथैव सोत्कण्ठो बभूव यथा अन्तर्गृहे निरुद्धः गजः बहिर्गत्वा भ्रमितुं सोत्कण्ठो भवति ।

METRE :—उपजाति । अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदी यावुपजातयस्ताः । उपजाति metre is formed from the combination of two metres, *viz.*, इन्द्रवज्रा and उपेन्द्रवज्रा ।

NOTES.

1. स्त्रीजनवल्लभानाम्—स्त्रियः एव जनः इति स्त्रीजनः ladies, स्त्रियाँ, कर्मधारय समास, स्त्रीजनस्य वल्लभानि इति स्त्रीजनवल्लभानि, तेषाम्, स्त्रीजनवल्लभानाम् (षष्ठी तत्पु०); वल्लभ means dear, agreeable, प्रिय ; the whole compound means " स्त्रियों को प्रिय लगने वाले, charm-

ing or pleasing to the ladies. This entire expression qualifies काननानाम् ।

पुरकाननानाम्—पुरे काननानि अथवा पुरेस्थितानि काननानि, तेषाम् (सप्तमी तत्पुरुष) कानन means जंगल, forest, पुरकाननानाम् means शहर के जंगलों की, of the urban forests.

मनोज्ञभावम्—मनोज्ञताम्, सुन्दरताम्, मनोहारिताम्, सुन्दरता, शोभा, loveliness, beauty, agreeableness, charming appearance, मनोज्ञश्चासौ भावश्च इति मनोज्ञभावः, तम् (कर्मधारय) ।

श्रुत्वा—निशम्य, आकर्ण्य, सुनकर, having heard, श्रु+क्त्वा ।

अन्तर्गृहे—घर के अन्दरूनी कमरे को अन्तर्गृह कहते हैं, the inner apartments of a house (Apte's Dictionary) ; अन्तःस्थं गृहम् इति अन्तर्गृहम् ।

अवरुद्धः—रोधं प्रापितः, बन्द हुआ, shut up, अव+√रुध्+क्त ।

नागः इव—गजः इव, हाथी के समान, like an elephant.

बहिः—गृहात् बहिः, घर से बाहर, *outside the house.*

प्रयाणाय—गमनाय, जाने के लिए, to go, प्र+√या+ल्युट्, चतुर्थी एक वचन, तुमर्थाच्च भाववचनात् इति तुमर्थे चतुर्थी ।

बुद्धिम् चकार—मतिं कृतवान्, ऐच्छत्, संकल्प किया, इच्छा की, resolved ; बुद्धि=√बुध्+क्तिन् । चकार is the लिट् लकार of √कृ in the third person, singular number, परस्मै पद ।

ततो नृपस्तस्य निशम्य भावं
पुत्राभिधानस्य मनोरथस्य।
स्नेहस्य लक्ष्म्या वयसश्च योग्या-
माज्ञापयामास विहारयात्राम् ॥ ३

PROSE ORDER :—ततः स नृपः पुत्राभिधानस्य मनोरथस्य भावं निशम्य स्नेहस्य लक्ष्म्याः वयसः च योग्यां वि यात्राम् आज्ञापयामास।

HINDI TRANSLATION :—तब राजा ने, पुत्र कहलाने वाले मन की इच्छाओं के पूर्ण करने वाले उन (गौतम) इच्छा को सुनकर, अपने प्रेम तथा ऐश्वर्य और म की अवस्था के अनुरूप मनोरंजनार्थ यात्रा करने की आ दे दी।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, the king, havi heard the inclination of him who was called son and who was (therefore) the fulfiller of wishes, ordered him a pleasure-trip suited to l own affection and wealth, and to the age (of l son, Gautam).

PURPORT IN SANSKRIT :—तदा नृपः पुत्रस्य इच्छां ज्ञा यात्रार्थं आज्ञापयामास। यावदुत्कृष्टं राज्ञः प्रेम पुत्रं प्र बभूव, यावच्च तस्य ऐश्वर्यं बभूव, यादृशी च गौतमस अवस्था आसीत्-तत्सर्वस्य योग्यां यात्राम् आज्ञापयामास।

METRE :—उपजाति

NOTES.

1. पुत्राभिधानस्य—अभिधान means नाम, name, denota tion, पुत्रः इति अभिधानं यस्य स तस्य (बहु०), जिसका

नाम पुत्र था, पुत्र बोले जाने वाले, of him who was called his son. This entire compound qualifies "तस्य"।

मनोरथस्य—मनसः रथः इति मनोरथः तस्य, a conveyance of the mind ; hence, one who was the fulfiller of all wishes. मन की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले उस (गौतम) का।

भावम्—इच्छाम्, inclination.

निशम्य—श्रुत्वा, सुनकर, having heard. नि+√शम्+ल्यप्।

स्नेहस्य (योग्याम्)—स्वप्रेम्णः अनुरूपाम् यात्राम्, अपने प्रेम के अनुरूप यात्रा (के लिए), अर्थात् शुद्धोदन का जितना प्रेम था, उस प्रेम के योग्य, suited to his own affection.

अर्थस्य (योग्याम्)—सम्पत्तेः, ऐश्वर्यस्य, धन के, of wealth.

वयसः (योग्याम्)—अवस्थायाः, गौतमस्य इति यावत्, गौतम की उम्र के (अनुरूप) suited to the age of (Gautam), *i e*, the king ordered for him a travel which was appropriate to Gautam's young age.

योग्याम्—अनुरूपाम्, उचिताम्, suited to, appropriate to.

विहारयात्राम्—विहार=वि√ह+घञ्, meaning recreation, pleasure, pastime, diversion, मनोरञ्जन, सैरसपाटा। विहाराय यात्राम् इति (चतुर्थी तत्पुरुष)। The meaning is "a trip for recreation" or "a pleasure-trip." सैरसपाटे के लिए यात्रा।

आज्ञापयामास—आदिदेश, आज्ञा दी, ordered.

HINDI TRANSLATION :—तब राजमार्ग से अंगहीनों गड़बड़ इन्द्रिय वालों को, वृद्धों और रोगियों को, भिखमंगों को, बड़ी शान्ति से, हटाकर सड़क की शोभा कर दी।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, they beauti decorated the highway by removing, with conciliatory methods, all those who were devo minor limbs, who had impaired organs of s the old, the ill etc. and the wretched beggars.

PURPORT IN SANSKRIT :—राजमार्गात् अवयवविक दोषेन्द्रियान्, कृपणान्, वृद्धान्, रोगादीन्, दी याचकान्, महता साम्नेन (मार्दवेन) दूरीकृत्य राजम तोरणादिना उत्कृष्टां शोभां चक्रुः।

METRE :—उपजाति।

NOTES

1. प्रत्यङ्गहीनान्—प्रत्यङ्गैः हीनान् (तृतीया तत्पु०) अवयवों से रहित, bereft or devoid of minor l such as the nose, the fingers.

2. विकलेन्द्रियान् —विकल, defective, impaired, से भरी, विकारपूर्ण, विकलानि इन्द्रियाणि येषां ते, (बहुव्रीहि), जिनकी इन्द्रियां गड़बड़ थीं, जिनकी विकार पूर्ण थीं, those whose organs of sense defective.

3. जीर्णातुरादीन् :—जीर्ण, decrepit, old persons, रोगी, Pl. जीर्णाश्च आतुराश्च इति जीर्णातुरा, (आदय येषां तान् (बहुव्रीहि), बूढ़े तथा रोगी लोगों को, the old, the ill etc.

HINDI [illegible] —[illegible]
श्रीमान् राजकुमार [illegible] पुत्रिन्न्‌ नौकर साथ [illegible]
मार्ग, उष्क संवत [illegible] कर प्रार [illegible] पिता [illegible]
आज्ञा [illegible] कर उसम [illegible] गये।

ENGLISH [illegible] —[illegible]
[illegible]
[illegible]
from the [illegible]
with his permission

PURPORT IN SANSKRIT :—राजमार्गे [illegible] सुविनी[illegible]
सति लक्ष्मीवान् राजपुत्रो [illegible] [illegible] नम्रश्च [illegible]
शोभने मुहूर्ते राजगृहाद्‌ [illegible] अवतीर्य पितृगृह[illegible]
पितु राज्ञो [illegible] तत्पति अभ्यगच्छत्।

METRE :—उपजाति।

NOTES

1. राजमार्गे श्रीमति कृते सति—श्रीमान् means beautif[illegible] charming; the entire expression means राजमार्ग [illegible] विभूषित (सुशोभित) कर दिये जाने पर, the highw[illegible] having been made beautiful. The locative case [illegible] राजमार्गे is according to ahe aphorism यस्य च भा[illegible] भावलक्षणम्। This is also called locative absolute [illegible] सति सप्तमी, or भावे सप्तमी।
2. श्रीमान्—लक्ष्मीवान् illustrious, great. श्रीः विद्यते अ[illegible] इति श्रीमान्। श्री+मतुप्।
3. विनीतानुचरः—विनीत, disciplined, trained. अनुच[illegible] attendant, नौकर; विनीताः अनुचराः यस्य स (बहु[illegible]

7 निरीक्ष्य—अवलोक्य, देखकर, having gazed. निर्+ईक्ष्+ल्यप् ।

8 वाचा—वाण्या, वचन से, वचनेन by speech. The base वाच् is declined वाक्, वाचौ वाचः ।

9 आज्ञापयति स्म—आज्ञा दे दी, gave permission

10 एनम्—एतम्, इसको ।

11 स्नेहात्—प्रेम्णा, प्रेम के कारण, on account of love

12 मनसः—मन से, from his heart

13 न मुमोच—नहीं छोड़ा, did not leave

ततः स जाम्बूनदचारुभूषै-
युक्तं चतुर्भिर्निभृतैस्तुरंगैः ।
अक्षीणविद्युद्द्युतिरश्मिधारं
हिरण्मयं स्यन्दनमारुरोह ॥ ८ ॥

Prose Order :—ततः स जाम्बूनद-चारुभूषैः चतुर्भिः निभृतैः तुरङ्गैः युक्तम् अक्षीणविद्युद्द्युति-रश्मिधारं हिरण्मयं स्यन्दनम् आरुरोह ।

Hindi Translation :—तब वह (राजकुमार) सुवर्ण के आभूषण पहने हुए चार विनीत घोड़ों से जुते हुए, तथा बड़ी तेज़ बिजली की सी उज्ज्वल किरणों वाले सुनहले रथ पर चढ़ गया ।

English Translation :—Then he mounted the golden chariot which emitted continuous radiance bright like that of powerful lightning, and to which were yoked four gentle horses wearing golding trappings.

Purport in Sanskrit—ततः राजपुत्रः चक्रवत्प्रकाशमानं रथम् आरुरोह । तस्मिन् रथे चत्वारः विनीता

स्यन्दनम् प्रदीप्तविद्युद्द्युतिरश्मिप्रभारं स्यन्दनम् (बहुव्रीहि) ऐसा रथ जिसकी किरणों में प्रचण्ड बिजली की सी चमचमाती किरणपंक्तियाँ निकल रही थीं, a chariot whose streaks of rays were radiant like a powerful lightning

हिरण्मयम्—सुवर्णमयम् सोने का. of gold.

स्यन्दनम् —रथम्, chariot.

आरूढः—चढ़ गया. mounted.

ततः प्रकीर्णोज्ज्वलपुष्पजालम्
विषक्तमाल्यं प्रचलत्पताकम् ।
मार्गं प्रपेदे सदृशानुयात्र-
श्चन्द्रः सनक्षत्र इवान्तरिक्षम् ॥ ९ ॥

ROSE ORDER :—ततः सनक्षत्रः चन्द्रः अन्तरिक्षम् इव प्रकीर्णोज्ज्वलपुष्पजालं विषक्तमाल्यं प्रचलत्पताकं मार्गं सदृशानुयात्रः सः कुमारः प्रपेदे ।

INDI TRANSLATION :—जिस प्रकार नक्षत्रों के समेत चन्द्रमा आकाश में प्रवेश करता है, उसी प्रकार अपने अनुरूप नौकर चाकरों के साथ राजकुमार मार्ग पर आए जिस पर श्वेत पुष्प बिखरे हुए थे, मालाएँ लटकी हुई थीं, और फड़फड़ाती पताकाएँ सुशोभित थीं ।

NGLISH TRANSLATION :—The prince, with a suitable retinue, came on the road which was strewn over with a network of white (bright) flowers, which had festoons suspended, and which had fluttering flags standing alongside; just as the moon accompanied by the stars appears in the sky.

URPORT IN SANSKRIT :—येन प्रकारेण नक्षत्रैः परिवृतश्चन्द्रमाः आकाशे उदेति तेनैव प्रकारेण सुशिक्षितैः भृत्यैः अनुचरैः

were suspended: प्रचलत्पताकम्—प्रचलत्—हिलते हुए, fluttering, पताका—flags, प्रचलन्त्यः पताकाः यस्मिन् सः तम् (बहुव्रीहि), qualifying मार्गम्, जिस पर फड़फड़ाती हुई पताकायें फहरा रही थीं, which had fluttering flags standing alongside, along which there stood fluttering flags. सदृशानुयात्रः—सदृश—अनुरूप, suitable; befitting, अनुयात्रा—अनुगामुक, a following, retinue, train, सदृशा अनुयात्रा यस्य सः (बहुव्रीहि), qualifying राजकुमारः, जिसके साथ अनुरूप नौकर चाकर थे, who had a suitable retinue along with him, who was accompanied by a suitable train

> कौतूहलात् स्फीततरैश्च नेत्रैः
> 　　नीलोत्पलैः किं नु विकीर्यमाणः।
> शनैः शनैः राजपथं जगाहे
> 　　पौरैः समन्तादभिवीक्ष्यमाणः ॥ १० ॥

PROSE ORDER :—कौतूहलात् पौरैः स्फीततरैः नेत्रैः समन्तात् अभिवीक्ष्यमाणः नीलोत्पलैः किन्तु विकीर्यमाणः सः शनैः शनैः राजपथं जगाहे।

HINDI TRANSLATION :—जब कौतूहलवश पुरवासियों द्वारा आँखें फाड़-फाड़ कर चारों ओर से वह देखे जा रहे थे तो मालूम होता था कि मानों वे नीले कमलों से बिखेरे जा रहे हैं। इस प्रकार वह राजकुमार धीरे-धीरे राजमार्ग पर चले जाते थे।

ENGLISH TRANSLATION :—Gazed at from all sides by citizens on account of curiosity with eyes open wide (with delight), he was, as it were, strewn

strumental is to be explained by the aphorism हेतौ तृतीया as in सौम्यगुणेन ; दीनस्य भावः दीनता तया दीनतया । ववन्दिरे—वन्द् धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन, नमस्कार किया, bowed to (him), paid respect : सौमुख्यतः—शोभनं मुखम् इति सुमुखम्, तस्य भावः सौमुख्यम्, beauty, तस्मात्, सौमुख्यतः; the तसिल् प्रत्यय in सौमुख्य has been used in the sense of the Ablative case : thus सौमुख्यतः means "on account of his beautiful face." श्रियम्—beauty. आशंसिषुः—आ शंस् धातु (to praise), लिट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन । आयुषः—the genitive singular of आयुस्, of age, of life. वैपुल्यम्—दीर्घत्वम्, length; विपुलस्य भावः वैपुल्यम् । आयुषः वैपुल्यम्—उम्र का बड़प्पन, बड़ी उम्र, longevity of life, length of life, i. e., a long life. आशंसिषुः—wished, hoped for.

निःसृत्य नार्यश्च महाकुलेभ्यः
　　व्यूहाश्च कैरातकवामनानाम् ।
कुब्जाः कृशेभ्यश्च निवेशनेभ्यो
　　देवानुयायिध्वजवत्प्रणेमुः ॥ १२ ॥

Prose Order :—नार्यः महाकुलेभ्यः कुब्जाः कैरातकवामनानां व्यूहाः च कृशेभ्यः निवेशनेभ्यः निःसृत्य देवानुयायिध्वजवत् प्रणेमुः ।

Hindi Translation :—स्त्रियाँ बड़े बड़े कुलों से तथा कुबड़े और किरातों और बौनों के समूह (अपने) छोटे छोटे घरों से निकल कर देवताओं का अनुसरण करने वाली ध्वजा के समान (उन्हें) प्रणाम करते थे ।

part of the country by the invaders. They appear to have been of service to the new-comers as watchmen and guards. वामन—बौना, a dwarf, a pigmy. कैरातकाश्च वामनाश्च इति कैरातकवामनाः (द्वन्द्व), तेषाम्, ग़रीब किरातों और बौनों के, of poor foresters and dwarfs, व्यूहाः—समूहाः, crowds. कुलेभ्यः—स्वल्पेभ्यः, तुच्छेभ्यः, small, poor ; वेश्मनिवेशेभ्यः—गृहेभ्यः, from houses ; निस्सृत्य—बहिरागत्य, बाहर निकलकर, having come out, निर्+सृ+ल्यप् । देवानुयायिध्वजवत्—देवानुयायिनः ध्वजाः इति देवानुयायिध्वजाः तद्वत् इति देवानुयायिध्वजवत्, देवताओं के अनुसरण करने वाले ध्वज, banner-cloths of the gods, प्रणेमुः—प्रणाम करते थे, bowed. The meaning is thus यथा देवानुयायिनः ध्वजाः वायुना नमन्ति तद्वत् तं गौतमं नमस्तिवन्तः. जिस प्रकार देवताओं के अनुसरण करने वाली ध्वजायें वायु से झुक जाती हैं, उसी प्रकार तमाम प्रजाओं ने गौतम को नमस्कार किया ।

ततः कुमारः खलु गच्छतीति
श्रुत्वा स्त्रियः प्रेष्यजनात्प्रवृत्तिम् ।
दिदृक्षया हर्म्यतलानि जग्मु-
र्जनेन मान्येन कृताभ्यनुज्ञाः ॥ १३ ॥

Prose Order :—ततः कुमारः गच्छति खलु इति प्रेष्यजनात् प्रवृत्तिं श्रुत्वा मान्येन जनेन कृताभ्यनुज्ञाः स्त्रियः दिदृक्षया हर्म्यतलानि जग्मुः ।

Hindi Translation :—जब नौकरों से यह समाचार सुनकर कि राजकुमार निकल रहे हैं स्त्रियाँ अपने देखने की इच्छा से अपने बड़ों की आज्ञा से कोठों पर चढ़ गईं ।

NOTES.

स्रस्तकांचीगुणविघ्निता :—स्रस्त means slipped or खिसका हुआ । कांची-मेखला, करधनी, girdle; गुण—string ; विघ्निताः—impeded, hindered, कांचीनां गुणाः कांची-गुणाः (ष० त०), करधनी के डोरे, strings of girdle. स्रस्ताश्च ते कांचीगुणाः इति स्रस्तकांचीगुणाः (कर्मधारय) खिसके हुए करधनी के डोरे, girdle-strings which had slipped down. स्रस्तकांचीगुणैः विघ्निताः (तृतीया तत्पुरुष) खिसके हुए करधनी के डोरों के कारण रुकावट डाली गई। impeded on account of the girdle-strings which had slipped down. सुप्तप्रबुद्धाकुललोचनाः—सुप्तम् means sleep, नींद; प्रबुद्ध—प्र+√बुध्+क्त, जगी हुई, awakened. आकुल—व्याकुल दुःखित, distressed ; लोचन—नेत्र, eye. सुप्तात् प्रबुद्धानि इति सुप्तप्रबुद्धानि (पंचमी तत्पुरुष), जगी हुई, awakened from sleep. सुप्तप्रबुद्धानि च आकुलानि लोचनानि यासां ताः सुप्तप्रबुद्धाकुललोचनाः (बहुव्रीहि), जिनकी आँखें नींद से जगी होने के कारण दुखती थीं, whose eyes were paining (aching) on account of being awakened from sleep. कौतूहलेन—औत्सुक्य से, उत्सुकता से, with curiosity, कुतूहलम् एव स्वार्थेऽण् । भृताः—पूर्णाः, भरी हुई, filled,√भृ+क्त। वृत्तान्तविन्यस्तविभूषणाः—वृत्तान्त means समाचार, news. वृत्तान्तश्रवणेन गच्छति इति समाचारश्रवणेन । विन्यस्त—विन्यस्त, उलटा पुलटा पहिना हुआ, wrongly worn; विभूषण—गहना, ornaments, वृत्तान्तेन विन्यस्तानि (विरुद्धं ...) विभूषणानि याभिः ताः, (बहुव्रीहि), समाचार सुनने से जिन्होंने उलटा पुलटा गहना पहिन लिया था वे स्त्रियाँ,

NOTES.

प्रासादसोपानतलप्रणादैः—प्रासाद, mansion, [illegible] सोपान, सीढ़ी, flight of steps ; तल-पैर का तलुआ, sole of the feet : प्रणाद—, नाद, ध्वनि sound. प्रासादानां सोपानानि इति प्रासादसोपानानि (षष्ठी तत्पुरुष), तलानां प्रणादाः तलप्रणादाः (षष्ठी तत्पुरुष), तलुओं की ध्वनि, sound produced by the soles of the feet ; प्रासादसोपानेषु तलप्रणादाः इति प्रासादसोपानतलप्रणादाः, तैः (सप्तमी तत्पुरुष), [illegible] की सीढ़ियों पर पैर के तलुओं से पैदा हुई ध्वनियों से, [illegible] कोठों की सीढ़ियों पर अपने पैर के तलुओं से ध्वनि पैदा [illegible] हुई वे स्त्रियाँ गई, with sounds produced by the [illegible] their feet on the flights of steps, *i. e.* when [illegible] placed their feet on the flight of steps, a sound [illegible] produced. Thus they went up making sound on [illegible] flight of steps. कांचीरवैः—कांची means मेखला, करधनी girdle, रव means शब्द, आवाज़, jingling, thus [illegible] कांचीनां रवाः तैः (षष्ठी तत्पु०), करधनी की आवाज़ अर्थात् करधनी से आवाज़ पैदा करती हुई, with the [illegible] of their girdles, *i. e.*, when they ascended the [illegible] of steps of the mansions, their girdles [illegible] [illegible]. Thus they went up making [illegible] by their girdles. नूपुरनिस्वनैः—नूपुर, पायजेब, पैर [illegible] anklet. निस्वन—शब्द, ध्वनि, sound [illegible] निस्वनाः तैः (ष० त०) पायजेबों की आवाज़ से [illegible] वे ऊपर चढ़ रही थीं या इनकी पायजेबों के घुंघरुओं से निकलती थी, *i. e.* the sound of their anklets [illegible] [illegible] when they ascended the flight



रहः प्रयुक्तानि प्रगल्भानि विभूषणानि ह्रिया निगूहमाना
(सखी) गतिं नियमाद्, तूर्णम् न ययौ ।

HINDI TRANSLATION :—दूसरी स्त्री जल्दी चलने में समर्थ होने पर भी, एक स्त्री ने एकान्त में पहिने हुए अपने चमचमाते गहनों को लज्जा के मारे छिपाती हुई, अपनी चाल रोक दी और वह जल्दी जल्दी न गई।

ENGLISH TRANSLATION :—Another woman, concealing through bashfulness her conspicuous ornaments which she had put on in privacy, controlled her speed, and did not go quickly, in spite of her ability to go hastily.

PURPORT IN SANSKRIT :—एका स्त्री शीघ्रगमने समर्था आसीत्। परन्तु स्वविभूषणानि तया एकान्ते धृतानि आसन्। अतः तानि लज्जया गोपायन्ती शीघ्रं न ययौ। इयमेतानि रता इति लोकैः मा ज्ञायेत अतः इति ता भूषणानि निगूहनार्थं उद्यता अतः समर्थापि शीघ्रं नागच्छत्।

METRE :—उपजाति।

NOTES.

रहः—एकान्ते, in a secret place, in private. प्रयुक्तानि—धृतानि, put on, पहिने हुए। प्रगल्भानि—द्योतमानि, महान्ति, चमचमाते हुए, brilliantly shining; conspicuous, remarkable, or big. ह्रिया—लज्जया, on account of shyness, or bashfulness. निगूहमाना—संवृण्वाना, छिपाती हुई, concealing. गतिं नियमाद्—अपनी चाल रोक कर, checked her gait, restrained her speed. तूर्णम्—शीघ्रम्, त्वरया, in haste, quickly. न ययौ—नहीं गई, did not go.

परस्परोत्पीडनपिण्डितानाम्
संमर्दसंक्षोभितकुण्डलानाम् ।
तासां तदा स्वनभूषणानां
वातायनेष्वसमसौ बभूव ॥ १८

PROSE ORDER :—परस्परोत्पीडनपिण्डितानाम् संमर्दसंक्षो
कुंडलानां स्वनभूषणानां तासां तदा वातायनेषु
बभूव ।

HINDI TRANSLATION :—ऐसा मालूम पड़ता था मानो
स्त्रियाँ एक दूसरे के ऊपर ढेर की ढेर दबाकर रख
गई हैं। उनके कुंडल भाड़ में भी सुशोभित हो र
और उनके गहने बज रहे थे। ऐसी अवस्था में,
स्त्रियों में, खिड़कियों पर, (एक प्रकार की) बेचैनी (
हो गई ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, at the windows the
was a sort of disorder among the ladies who b
(as it were) heaped themselves by pressing up
one another, whose ear-rings appeared beau
(even in) the crowd, and whose ornaments pr
duced a tinkling sound.

PURPORT IN SANSKRIT :—इत्थं प्रतिभाति स्म यत् ताः स्त्रि
परस्परस्य उपरि राशीकृत्य स्थापिताः सन्ति । त
कर्ण-कुंडलानि तस्मिन् महति जनसमूहेऽपि शुशुभि
आभूषणानि च तासां स्वनमकुर्वन् । एतादृशि दश
कुमारदिदृक्षया सर्वाः गवाक्षेषु सममेव
अतः संमर्दजन्यः ऊष्मातिरेको बभूव ।

METRE :—उपजाति ।

विनिःसृतानि स्त्रीणां मुखपंकजानि तु हर्म्येषु पंकजानि इव विरेजुः।

Hindi Translation :—खिड़कियों में से निकले हुए स्त्रियों के कमलसमान मुँह जिनके कुंडल (कर्णभूषण) एक दूसरे के ऊपर रक्खे हुए थे, महलों में चिपके हुए कमलों के समान सुशोभित हो रहे थे।

English Translation :—Women's lotus-like faces peeping out of the windows, with their ear-rings supported on one another, glowed like lotuses stuck on the palaces.

Purport in Sanskrit :—गवाक्षेषूपविष्टाः स्त्रियः मुखारविन्दानि बहिः निस्सार्य विलोकयन्ति स्म। एकांशमेकत्र समवेतत्वात् तासां कर्णभूषणानि परस्पर कर्णान्तेषु स्थापितानि इव ददृशिरे। तदानीं तासां मुखानि हर्म्ये प्रतिभान्ति स्म यथा प्रासादानां वातायनेषु कमल प्ररूढानि।

Metre :—उपजाति।

NOTES

परस्परोपाश्रितकुंडलानि—परस्परेषु उपाश्रितानि (sup- ported, held) कुंडलानि येषां तानि मुखपंकजानि (स्त्रियों के मुखपंकज (कमल सरीखे मुँह) जिनके कुंडल एक दू- के ऊपर थमे हुए थे, lotus-like faces whose ear-rings were supported on one another. वातायनेभ्यः विनि- सृतानि - खिड़कियों से निकले हुए, issuing out; वि+निर्+ सृ+क्त। मुखपंकजानि—मुखानि पंकजानि, इव (उपमा- [illegible] कर्मधारय), कमल सरीखे मुँह, lotus-like fa-

अन्योन्यगंडार्पितकुण्डलानि—गंड, कपोल, cheeks; अर्पित रक्खा हुआ, placed, set upon; कुण्डल—कर्णभूषण, ear-rings. अन्योन्यानां गण्डाः इति अन्योन्यगंडाः, तेषु अर्पितानि (निहितानि) कुंडलानि (कर्णभूषणानि) येषां मुखानां तानि मुखानि, वे मुँह जिनके कर्णभूषण एक दूसरे के गाल पर रक्खे हुए थे, the faces which ha I their ear-rings placed upon one another's cheeks. प्रमदोत्तमानाम् :—प्रमदाः (स्त्रियः) तासु उत्तमाः (श्रेष्ठाः) स्त्रियों में श्रेष्ठ, स्त्रियों में जो उत्तम थीं अर्थात् उत्तम स्त्रियाँ, of handsome ladies, of lovely (comely) women. बद्धाः—बँधे हुए, मिले हुए, united, combined. कलाप :—समूह, group, a collection, a bund

तस्मिन् कुमारं पथि वीक्षमाणाः
स्त्रियो बभुर्गामिव गन्तुकामाः ।
ऊर्ध्वोन्मुखाश्चैनमुदीक्षमाणा
नरा बभुर्द्यामिव गन्तुकामाः ॥ २२ ॥

PROSE ORDER : तस्मिन् पथि कुमारं वीक्षमाणाः स्त्रियः गां गन्तुकामाः इव बभुः । एवम् ऊर्ध्वोन्मुखाः उदीक्षमाणाः नराः द्यां गन्तुकामाः इव बभुः ।

HINDI TRANSLATION :—इस मार्ग में, (जाते हुए) कुमार को देखती हुई स्त्रियाँ पृथ्वी पर जाने की इच्छुक सी (जान) पड़ती थीं, इस (कुमार) को ऊपर मुँह करके देखते हुए पुरुष आकाश को जाने के इच्छुक से मालूम पड़ते थे। (अर्थात् स्त्रियाँ इतनी उत्सुकता से गर्दन निकाल निकाल देख रही थीं मानो वे भूतल पर आना चाहती थीं, और पुरुष तरह मुँह ऊपर किए, राजकुमार को देख रहे थे, मानो उड़कर आकाश पर चढ़ जाना चाहते थे)।

[ENG]LISH TRANSLATION :—The ladies, looking at the prince on the road, seemed to be desirous of descending on the earth: while the men, looking at him with their faces turned upwards, seemed to be eager to ascend the heaven.

[PURP]ORT IN SANSKRIT :—मार्गे गच्छन्तं कुमारं विलोकयन्त्यः स्त्रियः पृथिवीम् आगन्तुमिच्छन्तीति प्रतीयन्ते स्म। मुखानि ऊर्ध्वं कृत्वा ये नराः कुमारं पश्यन्ति स्म, ते आकाशं गन्तुमिच्छन्तीति प्रतिभान्ति स्म।

[M]ETRE :—उपजाति।

NOTES.

[विल]ोकमानाः—वि+ईक्ष+शानच्, qualifying स्त्रियः। गाम् पृथिवीम्, to the earth. गन्तुकामाः—जाने का इच्छुक, desirous of going (towards the earth); desirous of descending (on the earth)। "तुं काममनसोरपि" से तुम् प्रत्यय के 'म्' का लोप हो गया। पन्थम्—मार्गम्, prince। उदीक्षमाणाः—पश्यन्तः, देखते हुए (नराः), looking at. द्याम्—आकाशम्, heaven. "द्यो" ... शब्द है—रूप चलेगा—द्यौः द्यावौ द्यावः। द्याम् द्यावौ ...। द्यावा द्युभ्याम् द्युभिः—इत्यादि। 'द्याम्' द्वितीया का एक वचन है।

दृष्ट्वा च तं राजसुतं स्त्रियस्ता
जाज्वल्यमानं वपुषा श्रिया च।
धन्यास्य भार्येति शनैरवोच-
ञ्छुद्धैर्मनोभिः खलु नान्यभावात्॥२३॥

(वोचन्—अकथयन् , बोलीं, said, ब्रू धातु सामान्य भूत, (प्रथ)म पुरुष, बहुवचन ।

अयं किल व्यायतपीनबाहु
रूपेण साक्षादिव पुष्पकेतुः ।
त्यक्त्वा श्रियं धर्ममुपैष्यतीति
तस्मिन् स्त्रियो गौरवमेव चक्रुः ॥ २४ ॥

(P)ROSE ORDER :—व्यायतपीनबाहुः, रूपेण साक्षात् पुष्पकेतुः इव अयं श्रियं त्यक्त्वा धर्मम् उपैष्यति किल इति स्त्रियः तस्मिन् गौरवम् एव चक्रुः ।

HINDI TRANSLATION :—लम्बी तथा मोटी भुजाओं वाला और रूप में साक्षात् कामदेव के समान यह (राजकुमार) राजलक्ष्मी को त्यागकर धर्म (वैराग्य) धारण करेगा— इस बात को सुन कर स्त्रियों ने उनका आदर किया ।

ENGLISH TRANSLATION :—This prince, having lon(g) muscular arms, and resembling Cupid himself i(n) appearance, will give up royal splendour, an(d) resort to Dharma (renunciation)—at this repo(rt) the women did him honour.

(R)EPORT IN SANSKRIT :—यदा स्त्रियः जनानां मुखेभ्यः वार्तामश्रुण्वन् यत् , राजकुमारः राजलक्ष्मीं त्यक्त्वा धर्म(म्) उपैष्यति, तदा तासां हृदये तं प्रति महान् आदरो बभूव

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

व्यायतपीनबाहुः—व्यायत, दीर्घ, लम्बे; पीन, fleshy, muscular; बाहु, भुज, arm; व्यायतौ ...

PROSE ORDER :—याः च स्त्रियः वपुषा श्रिया च ज्वलन्तं तं राजसुतं दृष्ट्वा " अस्य भार्या धन्या " इति शुद्धैः मनोभिः खलु अन्यभावात् अभाषन्।

HINDI TRANSLATION :—शरीर तथा कान्ति से चमचमाते हुए उस राजकुमार को देख कर उन स्त्रियों ने शुद्ध चि मे, न कि किसी दूसरे विचार से, कहा, " इस राजकुम की पत्नी धन्य है। "

ENGLISH TRANSLATION :—Seeing the king's s shining in body and beauty, those women s with pure hearts and with no other feelin " Blessed is his wife. "

PURPORT IN SANSKRIT :—सुन्दरस्वरूपं जाज्वल्यमानकान्ति राजकुमारं दृष्ट्वा स्त्रियः शुद्धभावेन अकथयन् " अस्य भ धन्या, यस्या ईदृशः सुन्दरः ऐश्वर्यसम्पन्नः पतिः "। तासां कथने द्वेषादिभावो नाभूत्।

METRE :—इन्द्रवज्रा।

NOTES.

वपुषा—शरीरेण, शरीर से, by body. श्रिया—का कान्ति से, by lustre. जाज्वल्यमानम्—प्रकाशमानम्, देदी मानम्, चमचमाते हुए (उस राजकुमार को), shini burning bright राजसुतम्—राज्ञः सुतम् (षष्ठी तत्पुरु दृष्ट्वा—विलोक्य, देखकर, seeing, having seen, दृश+क्त्व अस्य—राजकुमारस्य, इस राजकुमार की, of this prin भार्या—पत्नी, wife. धन्या—परम सौभाग्यवती, blesse extremely fortunate. शुद्धैः—पवित्रैः, pure, मनोभिः अन्तःकरणैः, मन से, चित्त से, विचार से, by heart

तात्पर्य यह कि उन्होंने समझा कि जिस प्रकार मेरा अन्तःकरण अनेक कल्पनाओं से भरा हुआ है उसी प्रकार यह राजमार्ग अनेक विचित्र पदार्थों से भरा है।

ENGLISH TRANSLATION :—Seeing the royal road which was the first (for him), crowded with educated citizens dressed in neat sober clothes, the prince was somewhat delighted; but again he thought all this like the disposition of his own mind.

PURPORT IN SANSKRIT :—राजकुमारेण पूर्वं कदापि कोऽपि राजमार्गो न दृष्टः। स्वजीवने स एव राजमार्गः तेन प्रथमं दृष्टः। तं च मार्गं सुशिक्षितैः, सभ्यैः, स्वच्छगम्भीरवेषधरैः नागरिकजनैः समाकुलं दृष्ट्वा तस्य हृदये स्वल्पमात्रं प्रहर्षः समजायत। परन्तु ज्ञायमेव स ऽजानात् यत् यथा मम मनोवृत्तिः विविधकल्पनाभिराकीर्णास्ति तथैवायं मार्गोऽपि विचित्रवेषधरैः पुरुषैः व्याप्यते।

METRE :—इन्द्रवज्रा।

NOTES.

तत्पूर्वम्—स एव पूर्वः इति तत्पूर्वः, तं, that (road) was the first road that he had ever seen in his life; i. e., before this he had never seen a road. राजपथम्—see also stanzas Nos. 5 and 10. राज्ञः पन्थाः इति राजपथः (षष्ठी तत्पुरुष) "राजन् पुरुष: पथामषे" सूत्र से समास में पथिन् शब्द को " पथ " हो जाता है। शुचिधीर—शुचि, पवित्र, उज्ज्वल, स्वच्छ, neat, white, pure. धीर, sober; वेष or वेश means dress, शुचि च धीरः वेषः इति शुचिधीरवेषाः, तैः शुचिधीरवेषैः (बहुव्रीहि) इसका विशेष्य

स व्यायतपीनबाहुः (बहुव्रीहि) जिसकी भुजायें लम्बी और मांसल थीं, who had long fleshy arms. रूपेण—सौन्दर्येण, रूप में, सुन्दरता में, आकृति में, in beauty, in appearance. साक्षात्—प्रत्यक्षम् । पुष्पकेतुः—पुष्पाणि केतुः यस्य सः (बहुव्रीहि) अर्थात् पुष्प हों जिसके अस्त्र शस्त्र हैं, he who has flowers for his weapons (arrows). पुष्पधन्वा, कुसुमशर अर्थात् कामदेव । श्रियम्—राजलक्ष्मीं राजश्री ऐश्वर्य, राजसी ठाट बाट, royal splendour. त्यक्त्वा विहाय, छोड़ कर, abandoning, leaving, त्यज्+क्त्वा धर्मम्—वैराग्यरूपम् , वैराग्यरूप धर्म को, renunciation sense of duty. उपैष्यति—उप+इण् (गतौ), to take resort to, to practise, धारण करेगा, अभ्यास करेगा, लृट् लकार प्रथम पुरुष, एक वचन । किल—इति वार्ता श्रुता, it is reported, वार्तासम्भवार्थ-कित । गौरवम्—आदरम् respect. चक्रुः—किया, did, showed, paid.

कीर्णं तथा राजपथं कुमारः
पौरैर्विनीतैः शुचिधीरवेषैः ।
तत्पूर्वमालोक्य जहर्ष किञ्चिन्
मेने पुनर्भावमिवात्मनश्च ॥ २५ ॥

Prose Order :—तथा तत्पूर्वं राजपथं शुचिधीरवेषैः विनीतैः पौरैः कीर्णम् आलोक्य कुमारः किञ्चित् जहर्ष पुनः च आत्मनः भावम् इव मेने ।

Hindi Translation :—श्वेत तथा गम्भीर वस्त्र धारी और सुशिक्षित पुरवासियों से भरे राजमार्ग को देख कर राजकुमार कुछ प्रसन्न हुए, और फिर उन्होंने (उस सारे दृश्य को) अपने अन्तःकरण के समान समझा ।

"पौरैः," है; विनीतैः—decent, educated, well trained वि+नी+क, इसका भी विशेष्य "पौरैः" है। कीर्णम्—समाकीर्णं कॄ to scatter+क, this is past participle qualif. राजपथम्, कीर्णम्, means "packed, crowded, thronged." आलोक्य—दृष्ट्वा, देख कर, seeing. किञ्चित् a little, somewhat; this is an adverb modifying verb "अहर्ष"। भावम्—मनोवृत्तिम् temperament, disposition. "आत्मन्" शब्द "चित्त" के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

पुरं तु तत्स्वर्गमिव प्रहृष्टं
शुद्धाधिवासाः समवेक्ष्य देवाः।
जीर्णं नरं निर्ममिरे प्रयातुं
संचोदनार्थं क्षितिपात्मजस्य॥ २६

PROSE ORDER :—शुद्धाधिवासाः देवाः तु तत् पुरं स्वर्गम् इव प्रहृष्टं समवेक्ष्य क्षितिपात्मजस्य प्रयातुं संचोदनार्थं जीर्णं नरं निर्ममिरे।

HINDI TRANSLATION :—परन्तु पवित्र निवासस्थान वाले देवताओं ने उस नगर को स्वर्ग के समान प्रसन्न देख राजकुमार को वन जाने की प्रेरणा करने के निमित्त एक बूढ़ा जर्जरित शरीर वाला मनुष्य बनाया।

ENGLISH TRANSLATION :—But the gods, whose places of residence are sacred, seeing that city exultant like heaven itself, created an old man for the purpose of inducing the prince to repair (to the forest).

PURPORT IN SANSKRIT :—पवित्रस्थाननिवासिनः देवाः स्वर्गवत् प्रहृष्टं नगरं दृष्ट्वा एकं प्राचीनतरं पुरुषमुत्

गता उत्पन्ना, सञ्जाता, आ गई, पैदा हो गई, arisen, born, oused. आस्था—अभिलाष or रुचि or औत्सुक्य care, ought, consideration, curiosity. आगता आस्था यस्य स गतास्थः (बहुव्रीहि), जिसको (कुछ) रुचि पैदा हो गई थी, o had some interest created in him with regard to nowing something about that man. निष्कंपनिविष्टदृष्टिः —नास्ति कम्पः (motion) यस्मिन् कर्मणि तत् यथा स्यात् था, इति निष्कम्पम् (अव्ययीभाव) निश्चल ढंग से, motion-ss), intently. निविष्टा—बद्धा, fixed, निष्कम्पं निविष्टा ष्टिः यस्य सः (बहुव्रीहि), whose eyes were fixed motion-sly on the man, जिसकी आंख बिलकुल निश्चल तरीके से I पुरुष की ओर गड़ी हुई थी। संग्राहकम्—सारथिम्, ari teer. तत्र एव—यत्र स वृद्धः आसीत् तत्रैव, जहां वह बूढ़ा ा था।

कः एष भोः सूत नरोऽभ्युपेतः
केशैःसितैर्यष्टिविषक्तहस्तः ।
भ्रूसंवृताक्षः शिथिलानतांगः
किं विक्रियैषा प्रकृतिर्यदृच्छा ॥ २८ ॥

ose Order :—भोः सूत सितैः केशैः (युक्तः), यष्टिविषक्त-हस्तः, भ्रूसंवृताक्षः शिथिलानतांगः एषः कः नरः अभ्युपेतः । एषा किं विक्रिया, अथवा प्रकृतिः (अथवा) यदृच्छा ।

ndi Translation:—ऐ सारथि, सफ़ेद बालों से युक्त, और छड़ी पर हाथ टेके हुए वह कौन आदमी आया है जिसकी आंखें भौहों से छिपी हैं और जिसके अंग ढीले पड़ कर झुक गए हैं। क्या यह परिवर्तन हो गया है, या प्राकृतिक है या केवल आकस्मिक है।

PURPORT IN SANSKRIT:—कुमारेण यः प्रश्नः सारथिं प्रति कृतः तस्य उत्तरं कुमारात् गोपनीयमासीत्। तथापि स तत् प्रकटितवान्, कुमाराय निवेदितवान् इत्यर्थः, यतः स चिन्तितं यत् तथाकरणे न कापि हानिः दोषो वा। अथ ते एव देवाः तस्य बुद्धौ मोहमुदपादयन् यैः अयं निरमायि।

METRE :—उपजाति।

NOTES.

रथप्रणेता—सारथिः। कृतबुद्धिमोहः—बुद्धि, intellect, the mind; बुध्+क्तिन्। मोहः, stupefication, bewilderment मुह्+घञ्। बुद्धेः मोहः बुद्धिमोहः (षष्ठी तत्पुरुष), कृतः बुद्धिमोहः यस्य स कृतबुद्धिमोहः (बहु०) qualifying रथप्रणेता तैः एव देवैः कृतबुद्धिमोहः, जिसकी बुद्धि उन्हीं देवताओं द्वारा चकरा दी गई थी। अदोषदर्शी—दोषं पश्यति इति दोषदर्शी न दोषदर्शी इति अदोषदर्शी, जिसको कोई दोष नहीं दिखाई देता था, अर्थात् जो यह सोचता था कि कुमार से सारी बात कह देने में कोई हानि नहीं है, who saw no harm in revealing the matter to the prince. संवृत्यम्—गोपनीयम्, fit to have been kept secret अर्थम् तत्त्वम्, affair, matter. नृपात्मजाय—नृपस्य आत्मजः (पुत्रः) तस्मै (षष्ठी तत्पुरुष), to the prince, निवेदयामास—कथयामास related, revealed.

रूपस्य हर्त्री व्यसनं बलस्य
शोकस्य योनिर्निधनं रतीनाम्।
नाशः स्मृतीनाम् रिपुरिन्द्रियाणा-
मेषा जरा नाम ययैष भग्नः॥ ३०



tion. स्मृतीनाम्—स्मरणशक्तेः, of memory, स्मृ+क्ति। नाशः—destruction, annihilation, नश्+घञ्। एव नाम—यह निश्चय ही वृद्धावस्था है, this is, of course, old age. यया—जिसके द्वारा, by which, भग्नः—खण्डित तोड़ दिया गया है, has been broken, भञ्ज्+क्त, past participle.

पीतं ह्यनेनापि पयः शिशुत्वे,
कालेन भूयः परिसृप्तमुर्व्याम् ।
क्रमेण भूत्वा च युवा वपुष्मान्
क्रमेण तेनैव जरामुपेतः ॥ ३१ ॥

Prose Order :—अनेन शिशुत्वे पयः अपि पीतम् । हि काले उर्व्याम् भूयः परिसृप्तम्; क्रमेण च वपुष्मान् युवा भूत्वा, तेन एव क्रमेण जराम् उपेतः ।

Hindi Translation :—इस पुरुष द्वारा बाल्यावस्था में दूध भी पिया गया था; फिर समय पाकर पृथ्वी पर रेंगा गया था। धीरे-धीरे सुन्दर शरीर वाला युवा होकर उसी क्रम से वृद्धावस्था को प्राप्त हुआ है।

English Translation :—By this man, in his childhood, was milk also drunk; then, in course of time, he crawled on the ground; and having gradually grown into a youth with a beautiful form, he has, in the same order, attained to old age.

Purport in Sanskrit :—यथा सर्वे नराः बाल्ये मातृस्तनक्षीरं पिबन्ति तथैव अयमपि बाल्ये मातृस्तनक्षीरं पीतवान्। तदनन्तरमनेन पृथिव्याम् पद्भ्यां रिंगणं कृतम्। ...

HINDI TRANSLATION :—इस प्रकार कहे जाने पर चौंक उस राजकुमार ने सारथि से कुछ ऐसी बात कही, "यह दोष मुझे भी होगा ?" तब सारथि ने उससे कहा।

ENGLISH TRANSLATION :—Being thus told, the prince startling said something like this to the charioteer "Will this misery befall me too ?" Then the charioteer said to him.

PURPORT IN SANSKRIT :—यदा सारथिः कुमाराय एतद् निवेदयामास तदा कुमारः किञ्चित् आश्चर्यचकितो भूत्वा सारथिमुवाच, "किम्, एषा जराकृता विपत्तिः मयि आगमिष्यति"। एतत् श्रुत्वा सारथिः प्रत्यवदत्।

METRE :—उपजाति।

NOTES.

चलितः—कम्पितः, चौंक पड़ा हुआ, startled, चल्+क्त। सूतम्—सारथिम्, सारथि से, to the charioteer. बभाषे कथयामास, कहा, said, भाष् धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष, वचन। किम्—क्या, प्रश्नवाचक क्रियाविशेषण अव्यय। दोष विकारः evil, defect, misery.

आयुष्मतोऽप्येष वयोऽपकर्षो

निःसंशयं कालवशेन भावी।

एवं जरां रूपविनाशयित्रीं

जानाति चैवेच्छति चैव लोकः ॥ ३३ ॥

PROSE ORDER :—आयुष्मतः (भवतः) अपि एष वयोऽपकर्षः कालवशेन निःसंशयं भावी। एवम् एषः लोकः रूपविनाशयित्रीं जराम् जानाति इच्छति एव च।

PURPORT IN SANSKRIT :—यद्यपि जनाः प्रत्यक्षं पश्यन्ति
वृद्धावस्थया स्मरणशक्तिः क्षीयते, सौन्दर्यं नश्यति,
चापि क्षीणं भवति, तथापि ते नैव व्याकुलतां प्रदर्शयन्ति।

METRE :—उपजाति।

NOTES.

निर्विशेषम्—Adverb modifying the verb "हन्ति"
निर्गतः विशेषः (distinction) यस्मिन् कर्मणि तत् यथा स्यात्
तथा (अव्ययीभाव), without distinction, indiscrimin-
ately. हन्ति—destroys, mars, ruins, injures. ईदृशम्—
ईदृशीं व्यवस्थाम्, such a state of affairs. प्रत्यक्षतः—साक्षात्
पुरतः ; अक्ष्णोः प्रति प्रत्यक्षम्, तस्मात् प्रत्यक्षतः, before the
eyes, ईक्षमाणः—पश्यन्, देखता हुआ, seeing, ईक्ष्+शानच्
qualifying "लोकः।" लोकः—नरः, जनः, world, people.
"लोकस्तु भुवने जने" इत्यमरः। उद्वेगम्—agitation,
alarm, fear, anxiety, sorrow (Apte's Dictionary).
न उपैति—न प्राप्नोति, न अनुभवति, नहीं मालूम करता,
does not feel.

एवं गते सूत निवर्तयाश्वान्
शीघ्रं गृहाण्येव भवान्प्रयातु।
उद्यानभूमौ हि कुतो रतिर्मे
जराभये चेतसि वर्तमाने ॥ ३७।

PROSE ORDER :—हे सूत, एवं गते सति, अश्वान् निवर्त्य
भवान् शीघ्रम् एव गृहाणि प्रयातु। हि जराभये चेत
वर्तमाने (सति) कुतः मे उद्यानभूमौ रतिः।

उद्यानभूमौ (षष्ठी तत्पुरुष), बगीचे में, in the garden. कुतः—कहाँ से, whence; किम्+तसिल् । रतिः—आनन्द, प्रेम, fondness, pleasure, enjoyment.

अथाज्ञया भर्तृसुतस्य तस्य
निवर्तयामास रथं नियन्ता ।
ततः कुमारो भवनं तदेव
चिन्तावशः शून्यमिव प्रपेदे ॥ ३८ ॥

Prose Order :—अथ भर्तृसुतस्य तस्य आज्ञया नियंता रथं निवर्तयामास । ततः चिन्तावशः कुमारः तदेव भवनं शून्यम् इव प्रपेदे ।

Hindi Translation :—स्वामी के पुत्र की आज्ञा से सारथि ने रथ को लौटा दिया । तब चिन्तामग्न राजकुमार उसी सूने-से मकान में गए ।

English Translation :—Then, by the order of his master's son, the charioteer turned back the chariot; and the prince, absorbed in anxiety, entered the self-same house, as if it were vacant.

Purport in Sanskrit :—राजकुमारस्य आज्ञां प्राप्य सारथिः रथं राज-नगरं प्रति निवर्तयामास । चिन्तामग्नमानसो राजकुमारस्तस्मिन्नेव भवने प्राविशत् यस्मिन् पूर्वं क्रीडति स्म कौतुकस्य चित्तस्य उद्विग्नत्वात् सकलैश्वर्यसम्पन्नं तद्गृहं शून्यमिवापश्यत् कुमारः ।

Metre :—उपजाति ।

NOTES.

भर्तृसुतस्य—भर्तृ, स्वामी, master, सुत-पुत्र, son, भर्तुः सु भर्तृसुतः तस्य भर्तृसुतस्य (षष्ठी तत्पुरुष समास), स्वा

राजा की आज्ञा पाकर फिर उसी क्रम से (पहिले क्रम
बाहर चले गए ।

English Translation :—When, (continuously) re-
flecting about old age, he found no pleasure th
(in the palace), he went out again in the sa
order with the permission of the king.

Purport in Sanskrit:—निरन्तरं जरामेव ध्यायन् राजकुम
श्चिन्तामग्नो बभूव, अतस्तस्मिन् भवने सुखं नान्वभ
अस्मात्कारणात् पितुराज्ञया स पुनरपि तेनैव विधिना ब
निरगच्छत् येन विधिना पूर्वं गत आसीत् ।

Metre :—उपेन्द्रवज्रा ।

NOTES.

जरा जरा—this repetition shows continuity in t
meditation of the prince. अपरीक्षमाणः—चिन्तयन्, सोच
हुए, ध्यान करते हुए, meditating, pondering over, refle
ing ; present participle, qualifying कुमारः; प्र+परि
ईक्ष्+शानच् । शर्म—सुखम्, happiness, pleasure. शर्
मूलशब्द है (नपुंसकलिंग) शर्म शर्मणी शर्माणि इत्यादि
चलेंगे । लेभे—पाया, found, got, लभ् धातु आत्मने पदी, लि
लकार, प्रथम पुरुष एक वचन । नरेन्द्रानुमतः—नराणाम् इ
(स्वामी) इति नरेन्द्रः (षष्ठी तत्पुरुष) अर्थात् राजा, lord o
men, *i. e.*, the king. नरेन्द्रेण अनुमतः (आज्ञप्तः) इति नरेन्
नुमतः (तृतीया तत्पुरुष), राजा (शुद्धोदन) से आज्ञा पा
being permitted by the king. अनुमतः—अनु+मन्+क्त
भूयः—पुनः, again (indeclinable अव्यय), modifying th
verb ' जगाम ।' तेन एव क्रमेण—येन क्रमेण (विधिना) पू

drooping ; अंस, स्कन्ध, shoulder ; बाहु—भुज, arm. स्रस्तौ अंसौ बाहू च यस्य सः (बहुव्रीहि), जिसके कन्धे और भुजा झुकी हुई हों, whose shoulders and arms are droopin. कृशपाण्डुगात्रः—कृश, क्षीण, lean, thin ; पाण्डु, पीत, पीला pale ; गात्र—शरीरावयव, अंग, limbs, कृशं, पाण्डु च गात्रं यस्य सः कृशपाण्डुगात्रः (बहुव्रीहि), जिसका शरीर दुबला पतला तथा पीला पड़ गया हो, whose body (limbs) has become emaciated and pale. परम्—अन्यम् पुरुषम्, दूसरे पुरुष को, another person. समाश्लिष्य—आलिङ्ग्य, गले लगाकर, embracing, सम्+आ+श्लिष्+ल्यप् । अम्ब—हे मातः । " अम्ब " " अम्बा " शब्द का सम्बोधन है । करुण—दिल पिघलाने वाली, pathetic, pitiable. वाचम्—वाणीम्, speech. वाक् वाचौ वाचः, वाचम् वाचौ वाचः, वाचा वाग्भ्याम् वाग्भिः, इत्यादि ।

ततोऽब्रवीत् सारथिरस्य सौम्य
धातुप्रकोपप्रभवः प्रवृद्धः ।
रोगाभिधानः सुमहाननर्थः
शक्रोऽपि येनैष कृतोऽस्वतन्त्रः ॥ ४२ ॥

Prose Order :—ततः सारथिः अब्रवीत्—सौम्य, अस्य धातुप्रकोपप्रभवः प्रवृद्धः एषः रोगाभिधानः सुमहान् अनर्थः, येन शक्रः अपि अस्वतंत्रः कृतः ।

Translation :—तब सारथि ने कहा, " हे प्यारे, इसका यह रोगनामक बड़ा हुआ महान् अनर्थ बात पित्त और कफ के उमड़ने से पैदा हुआ है, जिससे इन्द्र भी स्वतन्त्र (मुक्त) नहीं है ।

और बीमारियों से व्याकुल होते हुए भी लोग आन
प्राप्त करते हैं।

ENGLISH TRANSLATION :—Then the charioteer said
"O Prince, this defect is universal. In spite of
being afflicted with diseases in this manner, an
suffering from ailments, people find pleasure."

PURPORT IN SANSKRIT:—सारथिः प्रत्यवदत्—हे कुमार, ए
विपत् साधारणतया सर्वान् बाधते। यद्यपि जनाः इत्थं रोगै
पीड्यन्ते, तथापि ते सुखमनुभवन्ति।

METRE :—उपजाति।

NOTES.

रथप्रणेता—सारथिः. प्रकर्षेण नयति असौ इति प्रणेता, रथस्य
प्रणेता इति रथप्रणेता (षष्ठी तत्पुरुष), साधारणः—common,
universal, general. परिपीड्यमाना—दुःखम् लभमानाः, परि+
पीड्—कर्मणि शानच्, अर्थात् कर्मवाच्य में शानच्, रुजातुरः—
रुज् means रोग, disease, sickness, रुक् रुजौ रुजः, रुजम् रुजौ
रुजः, रुजा रुग्भ्याम् रुग्भिः इत्यादि रूप होते हैं। आतुर, suffering
from, रुग्भिः आतुर इति रुजातुरः (तृतीया तत्पुरुष)। हर्षम्
उपैति—आनन्दम् अनुभवति, सुखम् लभते, सुखं प्राप्नोति, सुख
पाता है आनन्द प्राप्त करता है derives pleasure.

इति श्रुतार्थः स विषण्णचेताः
प्रावेपताम्बूर्मिगतः शशीव।
इदं तु वाक्यं करुणायितः सन्
प्रोवाच किंचिन्मृदुना स्वरेण

PROSE ORDER :—इति श्रुतार्थः विषण्णचेताः स अम्बुनिगतः शशी इव प्रावेपत । किंचित् करुणान्वितः सन् मृदुना स्वरेण इदं वाक्यं प्राबाच ।

HINDI TRANSLATION :—यह सब वृत्तान्त सुनकर राजकुमार उदासचित्त होकर, जल की लहर में प्रतिविम्बित चन्द्रमा के समान कांप उठे, और कुछ करुणा से भर कर कोमल स्वर से यह वाक्य बोले ।

ENGLISH TRANSLATION :—The prince who got dejected at heart on hearing this account trembled like the moon, reflected in the waves of water, and, being somewhat moved with pity, spoke the following words in a gentle tone.

PURPORT IN SANSKRIT :—उपरिगतं वृत्तान्तं श्रुत्वा कुमारस्य चेतः खिन्नंजातम् । अथ च स तथाऽकम्पत यथा जलाशयस्य तरंगेषु पतितं चन्द्रप्रतिबिम्बं कम्पते । अनन्तरं दयार्द्रो भूत्वा कोमलस्वरेण इदमवोचत् ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

इति—उपरिवर्णित, ऊपरवर्णन किया हुआ, mentioned above, described above. श्रुतार्थः—अर्थ means account वृत्तान्त । श्रुत—सुना हुआ, heard, श्रुधातु+क्तः श्रुतः अर्थः येन स श्रुतार्थः (बहुव्रीहि), जिससे वृत्तान्त सुना जा चुका था, by whom the account was heard, *i. e.*, who had heard the account. विषण्णचेताः—विषण्ण means " dejected, sad." चेतस्, मनः, हृदयम्, विषण्णं चेतः यस्य स विषण्णचेताः (बहुव्रीहि), इसका विशेष्य " स कुमारः " है, इसका

और बीमारियों से व्याकुल होते हुए भी लोग आन
प्राप्त करते हैं ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then the charioteer said "O Prince, this defect is universal. In spite of being afflicted with diseases in this manner, and suffering from ailments, people find pleasure."

PURPORT IN SANSKRIT—सारथिः प्रत्यवदत्—हे कुमार, एत
स्मिन् साधारणतया सर्वान् बाधते । यद्यपि जनाः इत्थं रोगैः
पीड्यन्ते, तथापि ते सुखमनुभवन्ति ।

METRE :—उपजातिः ।

NOTES.

साधारणः—सारथिः, सकर्मक भवति धारो इति प्रणेता, ष्यात प्रणेता इति साधारणः (षष्ठी तत्पुरुष), साधारणः—common, universal, general परिपीड्यमानः—दुःखम् अनुभवन्, परि + पीड् + कर्मणि शानच्, पीड़ित किये जाते हुए, रुजातुरः—रुज् means रुग्, disease, व्याधि, रुज् रुजो रुजा, रुजम् रुजौ रुजः, रुजा व्याधयः इति, इत्यादि रुग होते हैं । आतुर, suffering from, व्यथित, आतुरः इति रुजातुरः (तृतीया तत्पुरुष) । हर्षं उपैति—आनन्दम् अनुभवति, सुखम् लभते, सुख पाता है, सुख अनुभव करता है आनन्द प्राप्त करता है, derives pleasure

इति श्रुतार्थः स विषण्णचेताः
प्रावेपताम्बूर्मिगतः शशीव ।
इदं च वाक्यं करुणायमानः
प्रोवाच किञ्चिन्मृदुना स्वरेण ॥ ४६ ॥

अर्थ है " जिसका चित्त खिन्न हो गया था, whose heart become dejected ", रूप चलेंगे:—विषण्णचेताः विषण्णचेत विषण्णचेतसः, विषण्णचेतसम् विषण्णचेतसौ विषण्णचेत विषण्णचेतसा विषण्णचेतोभ्याम् विषण्णचेतोभिः इत्या अम्बूर्मिगतः—अम्बु means " जल, water ", अम्बु अम्बु अम्बूनि, अम्बु अम्बुनी अम्बूनि, इत्यादि रूप चलेंगे। ऊर्मि तरंग, लहर, wave, अम्बूनां (जलानां) ऊर्मयः इति अम्बूर्मि (षष्ठी तत्पुरुष), तासु गतः इति अम्बूर्मिगतः (सप्तमी तत्पुरु इसका विशेष्य " शशी " है. जल की लहरों में प्रतिबिम्बि reflected in the waves of water. प्रावेपत—अकम्पत, कां उठा। किञ्चित् करुणान्वितः—करुणा, दया, pity, compassion mercy, अन्वितः, युक्तः, filled with, करुणया (दयया अन्वितः इति करुणान्वितः (तृतीया तत्पुरुष), being filled with pity, being moved with pity. मृदुना—कोमलेन delicate, soft, gentle. स्वरेण—ध्वनिना, tone.

इदं च रोगव्यसनं प्रजानां
पश्यंश्च विश्रम्भमुपैति लोकः।
विस्तीर्णविज्ञानमहो नराणां
हसन्ति यद्रोगभयैरमुक्ताः ॥ ४६ ॥

PROSE ORDER :—प्रजानाम् इदं रोगव्यसनं पश्यन् लोक विश्रम्भम् उपैति। यत् रोगभयैः अमुक्ताः अपि हसन्ति (अतः) नराणाम् विस्तीर्णविज्ञानम् अहो।

HINDI TRANSLATION :—लोगों (मनुष्यमात्र) के इस रोग रूपी संकट को देखने पर भी संसार विश्वास कर रहा है। चूँकि रोग के भय से मुक्त न होने पर भी लोग हँसते हैं

अर्थ है " जिसका चित्त खिन्न हो गया था, whose heart ha become dejected ", रूप चलेंगे:—विषण्णचेताः विषण्णचेतसौ विषण्णचेतसः, विषण्णचेतसम् विषण्णचेतसौ विषण्णचेतस विषण्णचेतसा विषण्णचेतोभ्याम् विषण्णचेतोभिः इत्यादि अम्बूर्मिगतः—अम्बु means " जल, water ", अम्बु अम्बुनी अम्बूनि, अम्बु अम्बुनी अम्बूनि, इत्यादि रूप चलेंगे। ऊर्मि— तरंग, लहर, wave, अम्बूनां (जलानां) ऊर्मयः इति अम्बूर्मय (षष्ठी तत्पुरुष), तासु गतः इति अम्बूर्मिगतः (सप्तमी तत्पुरुष), इसका विशेष्य " शशी " है, जल की लहरों में प्रतिबिम्बित, reflected in the waves of water. प्रावेपत—अकम्पत, कांप उठा। किञ्चित् करुणान्वितः—करुणा, दया, pity, compassion, mercy, अन्वितः, युक्तः, filled with, करुणया (दयया) अन्वितः इति करुणान्वितः (तृतीया तत्पुरुष), being filled with pity, being moved with pity. मृदुना—कोमलेन, delicate, soft, gentle. स्वरेण—ध्वनिना, tone.

इदं च रोगव्यसनं प्रजानां
पश्यंश्च विश्रम्भमुपैति लोकः।
विस्तीर्णविज्ञानमहो नराणां
हसन्ति यद्रोगभयैरमुक्ताः ॥ ४६ ॥

PROSE ORDER :—प्रजानाम् इदं रोगव्यसनं पश्यन् लो विश्रम्भम् उपैति। यत् रोगभयैः अमुक्ताः अपि हस (अतः) नराणाम् विस्तीर्णविज्ञानम् अहो।

HINDI TRANSLATION :—लोगों (मनुष्यमात्र) के इस रो रूपी संकट को देखने पर भी संसार विश्वास कर रहा है चूँकि रोग के भय से मुक्त न होने पर भी लोग हँसते हैं

में चैन कर रहे हैं और मज़ा कर रहे हैं, laugh, *i. e.*, are enjoying the pleasures of the world. विस्तीर्णविज्ञानम्—विस्तीर्णं च तत् विज्ञानम् इति विस्तीर्णविज्ञानम् (कर्मधारय), बड़ा भारी ज्ञान, extensive, great knowledge, अहो—आश्चर्यम्, it is wonderful.

निवर्त्यतां सूत बहिः प्रयाणा-
नरेन्द्र सद्मैव रथः प्रयातु ।
श्रुत्वा च मे रोगभयं रतिभ्यः
प्रत्याहतं संकुचतीव चेतः ॥ ४७ ॥

PROSE ORDER :—हे सूत, रथः बहिः प्रयाणात् निवर्त्यताम् नरेन्द्रसद्म एव प्रयातु । रोगभयं श्रुत्वा रतिभ्यः प्रत्याहतं मे चेतः संकुचति इव ।

HINDI TRANSLATION :—हे सारथि, रथ बाहर जाने से रुक जाय और राजमहल को चला जाय । रोगों का भय सुनकर मेरा मन भोगों से हटकर सिकुड़ा-सा आ रहा है ।

ENGLISH TRANSLATION :—O charioteer, let the chariot refrain from going out; let it go to the royal palace itself. Having heard the danger of disease, my mind, turned away from pleasures, shrinks as it were.

PURPORT IN SANSKRIT:—हे सारथे, रथं बहिर्गमनात् निवर्तय, राजप्रासादं च नय । रोगभयं श्रुत्वा मम मनः सांसारिकसुखेभ्यो विरक्तं भूत्वा संकोचं प्राप्नोति ।

METRE :—उपजाति ।

F. 7

NOTES

बहिः—अव्ययम्, it means "out" प्रयाण—जाना going out, प्र+या+ल्युट्, बहिः प्रयाणात्—बाहर जाने से, from going out. निवर्तताम्—should turn back. नरेन्द्रसद्म—नराणाम् इन्द्रः इति नरेन्द्रः (षष्ठी तत्पुरुष), अर्थात् राजा। नरेन्द्रस्य सद्म इति नरेन्द्रसद्म (षष्ठी तत्पुरुष), राजा के घर को, राजसदन को, 'सद्मन्' मूलशब्द है, नपुंसकलिंग है; सद्म सद्मनी सद्मानि इत्यादि रूप चलेंगे। प्रयातु—गच्छतु, रथः गच्छतु; सद्म अथवा राजगृहं प्रयातु। रतिभ्यः—विषयसुखेभ्यः, सांसारिक सुखों से, from the pleasures. प्रत्याहृतम्—निवृत्तम्, हटा हुआ, turned away from, repelled, प्रति+आ+हृ+क्त, संकुचति इव—shrinks as it were; contracts as it were मे चेतः—मम मनः, मम हृदयम्, मेरा चित्त। चेतः चेतसी चेतांसि, चेतः चेतसी चेतांसि, चेतसा चेतोभ्याम् चेतोभिः चेतसे चेतोभ्याम् चेतोभ्यः इत्यादि रूप चलेंगे।

ततो निवृत्तः स निवृत्तहर्षः
　　प्रध्यानयुक्तः प्रविवेश सद्म ।
तं द्विस्तथा प्रेक्ष्य च संनिवृत्तं
　　पुर्यागमं भूमिपतिश्चकार ॥ ४८ ॥

PROSE ORDER :—ततः स निवृत्तहर्षे प्रध्यानयुक्तः निवृत्तः सन् सद्म प्रविवेश। तं च तथा द्वि संनिवृत्तं प्रेक्ष्य भूमिपतिः पुरि आगमं चकार।

HINDI TRA[illegible] तब उन (राजकुमार) की प्रसन्नता जाती रही; [illegible] ध्यान में मग्न हो गए और लौटकर मकान में घुस गए। उन (राजकुमार) को इस प्रकार दोबारा

पु—

Notes

निवर्तनस्य—लौटने का, ... नि—वृत+ल्युट्। निमित्तम्—कारणम्, cause, आत्मानम्—अपने को अनेन—राजकुमारेण, by the prince संत्यक्तम्—छोड़ा हुआ, abandoned, deserted सम्—त्यज् धातु—क्त। ... e had seen sights which produced aversion ... worldly interests—he saw (1) an old man (2) a ... man (3) a dead body. मार्गस्य—येन मार्गेण कुमारेण गन्तव्यमासीत् तस्य मार्गस्य, जिस राह से राजकुमार जा रहे थे उस राह की, of the path by which the prince was passing शौचाधिकृताय—शौच means भीषणदृश्यनिवारणादि, सफाई अर्थात् भयानक दृश्यों को दूर करना इत्यादि, clearance, i. e., removal of such sights as were fearful. शौच may also mean "removal of dust, rubbish etc." अर्थात् कूड़ा करकट का हटाना। अधिकृत—नियुक्त, appointed, responsible for, entrusted with. शौचे अधिकृतः इति शौचाधिकृतः तस्मै शौचाधिकृताय (सप्तमी तत्पुरुष), सफाई के लिए नियुक्त पुरुष से, with the man responsible for (or appointed for) the cleanliness. " क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः " सूत्र से " शौचाधिकृताय " में चतुर्थी है। इस सूत्र का अर्थ है "क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय् या उसी प्रकार के अर्थ रखने वाली धातुओं के योग में, जिस पर क्रोध हो, वह चतुर्थी में रक्खा जाता है।. चुक्रोश—क्रुश्धातु का अर्थ है " चिल्लाना, रोना, शोक करना", परंतु यहाँ पर " चुक्रोश " अर्थात् " गुस्सा हुए " यह अर्थ बहुत ही उपयुक्त पड़ेगा। क्रुश्धातु means " to cry out, to scream, to weep, to lament " ; but here it is very

appropriate to take it in the sense of "became angry." रुष्टः अपि—क्रुद्धः अपि, क्रुद्ध होने पर भी, although angry. उग्रदण्डः—उग्र, कठोर, घोर, severe, harsh. दण्ड, punishment, उग्रः दण्डः यस्य सः उग्रदण्डः (बहुव्रीहि), जिसकी सज़ा कठोर हो, जो कड़ी सज़ा देता हो, whose punishment is severe, *i. e.*, he who inflicts severe punishment, *i. e.* he simply scolded him ; he did not inflict any severe punishment on him.

भूयश्च तस्मै विदधे सुताय
　　विशेषयुक्तं विषयप्रकारम् ।
चलेन्द्रियत्वादपि नातिशक्तो
　　नास्मान्विजह्यादिति नाथमानः ॥५०॥

PROSE ORDER :—अस्मान् न विजह्यात् इति नाथमानः (नृपः) चलेन्द्रियत्वात् अपि न अतिशक्तः (इति) भूयश्च तस्मै सुताय विशेषयुक्तं विषयप्रकारं विदधे ।

HINDI TRANSLATION :—"हम लोगों को छोड़ न दें" ऐसी इच्छा करते हुए राजा ने, इस आशा से कि शायद इन्द्रियों की चंचलता के कारण यह कुमार बहुत दृढ़ न हो—उस पुत्र के लिए फिर से एक विशेष प्रकार के भोगविलास का प्रबन्ध किया ।

ENGLISH TRANSLATION :—"May he not leave us"—thus desiring, the king again arranged for his son a kind of pleasure which was full of specialities, under the impression that the prince was not very firm on account of the unsteadiness of the senses.

variety. विषयाणां प्रकारः इति विषयप्रकार (षष्ठी तत्पुरुष) तम् विषयप्रकारम्। विदधे—अकरोत्, प्रबन्धमकरोत् इति यावत्, किया, अर्थात् प्रबन्ध किया, arranged. वि उपसर्गपूर्वक धा धातु, लिट्लकार, प्रथम पुरुष, एक वचन।

यदा च शब्दादिभिरिन्द्रियार्थै-
रन्तःपुरे नैव सुतोऽस्य रेमे।
तदा बहिर्व्यादिशतिस्म यात्रां
रसान्तरं स्यादिति मन्यमानः ॥ ५१ ॥

PROSE ORDER :—यदा शब्दादिभिः इन्द्रियार्थैः अस्य सुतः अन्तःपुरे न एव रेमे, तदा रसान्तरं स्यात् इति मन्यमानः बहिः यात्रां व्यादिशतिस्म।

HINDI TRANSLATION :—जब शब्दादिक इन्द्रियविषयों से उनके पुत्र ने अन्तःपुर में आनन्द नहीं पाया, तब राजा ने यह सोचकर कि कदाचित् कोई दूसरा आनन्द इन्हें आकर्षित कर सके, बाहर भ्रमण करने की आज्ञा दी।

ENGLISH TRANSLATION :—When, in the harem, his son did not derive pleasure in the various objects of senses, such as speech, the king ordered a travel outside, under the impression that a diversion in enjoyments might amuse the prince.

PURPORT IN SANSKRIT :—यदा राजप्रासादे कुमारो संगीतनृत्यादिषु विषयेषु सुखं नान्वभवत् तदा राजाऽऽज्ञापितवान् यत् एव बहिर्गत्वा विविधानि वस्तूनि विविधानि स्थानानि च दर्शय, यतः राजा अचिन्तयत् यत् भिन्नभिन्नविषयभोग संयोगात् कदाचित् अस्य मनो रमेत।

METRE :—उपजाति।

NOTES.

शब्दादिभिः—शब्द, speech, शब्दः आदिः येषां तैः शब्दादिभिः (बहुव्रीहि) इसका विशेष्य "

इन्द्रियार्थैः—अर्थः, विषय, object. इन्द्रियाणां अर्थाः तैः इन्द्रियार्थैः (षष्ठी तत्पुरुष), by the objects of senses पांच [illegible] त्वचा (त्वक्), नासिका, जिह्वा, नेत्र। "शब्द"। त्वचा का विषय है "स्पर्श"। "गन्ध"। जिह्वा का विषय है "स्वाद" "रूप"। शब्द कान द्वारा ग्रहण [illegible] त्वचा द्वारा होता है, जब त्वचा में कोई पता चलता है कि कहाँ चीज़ छूती है, (या गन्ध) नासिका द्वारा मालूम [illegible] पता चलता है कि कहाँ वस्तु सुगन्ध स्वाद का पता जिह्वा से चलता है कड़ीवा, नमकीन, मीठा इत्यादि स्वाद हैं। रूप (शकल, सूरत) नेत्र द्वारा से ही संसार भर की वस्तुओं की सकता है। इसलिए "शब्द स्पर्श गन्ध या इन्द्रियविषय कहे जाते हैं। इनके आसक्त होता है अथवा विषय द्वारा आकर्षित करके अपने विषय मिल जाते [illegible] उस विषय में आसक्त हो जाता है। अब विपरीत विषय मिलता है तब मनुष्य जैसे यदि मधुर संगीत, [illegible] [illegible] [illegible]

in the harem. न रेमे—आनन्दं सुखं वा न प्राप्तवान्, सुख नहीं पाया, did not derive pleasure. रम् धातु आत्मनेपदी है "रेमे" लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है। रेमे रेमाते रेमिरे, इत्यादि रूप चलते हैं। रसान्तरं स्यात्—रस, pleasure, अन्यो रसः रसान्तरम्, यथा अन्यो देशः देशान्तरम्, अन्यो लोकः लोकान्तरम्। "रसान्तरम्" का अर्थ है "दूसरा आनन्द, आनन्द में कोई परिवर्तन"। अर्थात् घर में क्रीड़ा न करके बाहर क्रीड़ा का प्रबन्ध—यही रसान्तर हुआ। मन्यमानः—समझता हुआ, thinking, understanding. मन् धातु से शानच् प्रत्यय। बहिः—अन्तःपुरात् बहिः, महल से बाहर, outside the palace. यात्राम्—भ्रमणार्थयात्राम्, travel. व्यादिशतिस्म—आज्ञप्तवान्, आज्ञा दी, ordered

स्नेहाच्च भावं तनयस्य बुद्ध्वा
स सर्वदोषानविचिन्त्य कांश्चित्।
योग्याः समाज्ञापयति स्म तत्र
कलास्वभिज्ञा इति वारमुख्याः॥ ५२॥

Prose Order :—तनयस्य भावं बुद्ध्वा, कांश्चित् सर्वदोषान् अविचिन्त्य, स्नेहात् कलासु अभिज्ञाः योग्याः वारमुख्याः तत्र समाज्ञापयति स्म।

Hindi Translation :—पुत्र की मनोवृत्ति को समझकर और बार बार उभाड़ने से जो जो दोष पैदा होते हैं उन सारे दोषों को बिना विचारे हुए, प्रेम के कारण, कलाओं में निपुण तथा योग्य वेश्याओं को वहाँ (कुमार की शुश्रूषा में रहने के लिए) आज्ञा दे दी।

English Translation :—Realising the mentality of the prince, and unmindful of any of the evils of

NOTES.

शब्दादिभिः—शब्द, speech, शब्दः आदिः येषां ते शब्दादयः तैः शब्दादिभिः (बहुव्रीहि) इसका विशेष्य "इन्द्रियार्थैः" है।

इन्द्रियार्थैः :—अर्थः, विषय, objert. इन्द्रियाणाम् अर्थाः इति इन्द्रियार्थाः तैः इन्द्रियार्थैः (षष्ठी तत्पुरुष), इन्द्रियविषयों से, by the objects of senses पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं—कान, त्वचा (खाल), नासिका, जिह्वा, नेत्र। कान का विषय है "शब्द"। त्वचा का विषय है "स्पर्श"। नासिका का विषय है "गन्ध"। जिह्वा का विषय है "स्वाद"। नेत्र का विषय है "रूप"। शब्द कान द्वारा ग्रहण किए जाते हैं। स्पर्श त्वचा द्वारा होता है, जब त्वचा में कोई चीज़ छू जाती है, तो पता चलता है कि वह चीज़ ठंडी है, अथवा गर्म है। महक (या गन्ध) नासिका द्वारा मालूम होती है। नासिका से पता चलता है कि अमुक वस्तु दुर्गन्ध करती है अथवा सुगन्ध। स्वाद का पता जिह्वा से चलता है। खट्टा, मीठा, कड़ुवा, कसैला, नमकीन, तीता इत्यादि स्वाद जिह्वा से ही मालूम होते हैं। रूप (शकल, सूरत) नेत्र द्वारा ग्रहण किया जाता है। नेत्र से ही संसार भर की वस्तुओं की सूरत (आकृति) देखी जा सकती है। इसलिए "शब्द स्पर्श गन्ध स्वाद रूप" ये इन्द्रियार्थ या इन्द्रियविषय कहे जाते हैं। इनके द्वारा मनुष्य का मन आसक्त होता है अथवा विरक्त होता है। जब इन्द्रियों को आकर्षित करने वाले विषय मिल जाते हैं तब मनुष्य का मन उस विषय में आसक्त हो जाता है। जब इन्द्रियों की रुचि के विपरीत विषय मिलता है, तब मनुष्य का मन हट जाता है. जैसे यदि मधुर रागरागिनि, तथा हास्यविनोद सुनने को मिले तो मन प्रसन्न हो जाता है। [illegible]—[illegible],

in the harem. न रेमे—आनन्द सुख पा न सका, सुख नहीं पाया, did not derive pleasure. रम् धातु आत्मनेपदी है "रेमे" लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है। रेमे रेमाते रेमिरे, इत्यादि रूप चलते हैं। रसान्तरं स्यात्—रस, pleasure. अन्यो रसः रसान्तरम्, यथा अन्यो देशः देशान्तरम्, अन्यो लोकः लोकान्तरम्। "रसान्तरम्" का अर्थ है "दूसरा आनन्द, आनन्द में कोई परिवर्तन"। अर्थात् घर में क्रीड़ा न करके बाहर क्रीड़ा का प्रबन्ध—यही रसान्तर हुआ। मन्यमानः —समझता हुआ, thinking, understanding. मन् धातु से शप् प्रत्यय। बहिः—अन्तःपुरात् बहिः, महल से बाहर, outside palace यात्राम्—भ्रमणार्थयात्राम्, travel. इत्यादिदेश आज्ञापयत्, आज्ञा दी, ordered.

स्नेहाच्च भावं तनयस्य बुद्ध्वा
संवेगदोषानविचिन्त्य कांश्चित्।
योग्याः समाज्ञापयति स्म तत्र
कलास्वभिज्ञा इति वारमुख्याः ॥ ५२ ॥

Prose Order :—तनयस्य भावं बुद्ध्वा, कांश्चित् संवेगदोषान् अविचिन्त्य, स्नेहात्, कलासु अभिज्ञाः योग्याः वारमुख्याः तत्र समाज्ञापयति स्म।

Hindi Translation :—पुत्र की मनोवृत्ति को समझकर और बार बार उभाड़ने से जो जो दोष पैदा होते हैं उन सभी दोषों को बिना विचारे हुए, प्रेम के कारण, कलाओं में निपुण तथा योग्य वेश्याओं को वहाँ (कुमार की शुश्रूषा में रहने के लिए) आज्ञा दे दी।

English Translation :—Realising the mentality of the prince, and unmindful of any of the evils of

in the harem. न रेमे—आनन्दं सुखं वा न प्राप्तवान्, सुख नहीं पाया, did not derive pleasure. रम्‌धातु आत्मनेपदी है "रेमे" लिट्‌लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है। रेमे रेमाते रेमिरे, इत्यादि रूप चलते हैं। रसान्तरं स्यात्—रस, pleasure, अन्यो रसः रसान्तरम्, यथा अन्यो देशः देशान्तरम्, अन्यो लोकः लोकान्तरम्। "रसान्तरम्" का अर्थ है "दूसरा आनन्द, आनन्द में कोई परिवर्तन"। अर्थात् घर में क्रीड़ा न करके बाहर क्रीड़ा का प्रबन्ध—यही रसान्तर हुआ। मन्यमानः—समझता हुआ, thinking, understanding मन् धातु से शानच् प्रत्यय। बहिः—अन्तःपुरात् बहिः, महल से बाहर, outside the palace यात्राम्—भ्रमणार्थयात्राम्, travel व्यादिदेश—आज्ञप्तवान्, आज्ञा दी, ordered

स्नेहाच्च भावं तनयस्य बुद्ध्वा
संवेगदोषानविचिन्त्य कांश्चित्।
योग्याः समाज्ञापयति स्म तत्र
कलास्वभिज्ञा इति चारुमुख्याः ॥ ५२ ॥

PROSE ORDER :—तनयस्य भावं बुद्ध्वा, कांश्चित् संवेगदोषान् अविचिन्त्य, स्नेहात्, कलासु अभिज्ञाः योग्याः चारुमुख्याः तत्र समाज्ञापयति स्म।

HINDI TRANSLATION :—पुत्र की मनोवृत्ति को समझकर और बार बार उभाड़ने से जो जो दोष पैदा होते हैं उन सारे दोषों को बिना विचारे हुए, प्रेम के कारण, कलाओं में निपुण तथा योग्य वेश्याओं को वहाँ (कुमार की इच्छा में रहने के लिए) आज्ञा दे दी।

ENGLISH TRANSLATION :—Realising the mentality of the prince, and unmindful of any of the evil

excitement, the king ordered, out of affection, competent courtezans, proficient in arts (to wait upon the prince).

PURPORT IN SANSKRIT :—कुमारस्य विरक्तिरूपं मनसोऽभिलाषं ज्ञात्वा उद्वेगकारणीभूतहेतून् निरस्कृत्य, पुत्र-प्रेमवशात् वशीकरणकलासु निपुणाः, चतुराश्च वाराङ्गनाः कुमारस्य शुश्रूषायां नियुक्तवान् ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

भावम्—अभिप्रायम्, मनोऽभिलाषम्, mental disposition, idea, mentality, *i. e.*, renunciation, (विरक्ति)। कांश्चित्—कतिपयान्, कुछ (दोषों) को। संवेगदोषान्—संवेग, उद्वेग excitement. संवेगस्य दोषाः इति संवेगदोषाः तान् संवेगदोषान् (षष्ठी तत्पुरुष) उभाड़ने के दोषों को, evils of excitement. अविचिन्त्य—अविगणय्य, निरस्कृत्य, बिना विचार किए हुए, without thinking of. The king did not think what evils might arise if he gave him cause of irritation or excitement. स्नेहात्—प्रेमवशात्, स्नेह से, प्रेम के कारण, on account of affection. कलासु—in all the arts, वशीकरणादिकलासु, वश में करने की कला तथा इसी प्रकार की अन्य कलाओं में । अभिज्ञा :—निपुणाः, चतुराः, fully qualified, well versed, qualifying " courtezans. " अभिज्ञाः is nominative case, plural number, feminine gender. योग्याः—suitable, competent. This is also an adjective, qualifying " courtezans, " ... plural



क, इस विशेषण पद का " राजमार्गे " विशेष्य है। परीक्षिते—जीर्णरुग्णादिभिः वर्जिते, examined, scrutinised, *i. e.*, free from old and diseased men. The road was this time more carefully examined than before, inasmuch as no old and diseased persons were allowed to pass along it. अत्यास्य—बहिरानीय, बाहर लाकर, having brought out. कुमारम्—राजपुत्रम् सिद्धार्थम्। बहिः—अन्तःपुरात् बहिः अन्तःपुर से बाहर, outside the harem. प्रस्थापयामास—प्रेषयामास, रवाना कर दिया, sent out.

ततस्तथा गच्छति राजपुत्रे
तैरेव देवैर्विहितो गतासुः।
तं चैव मार्गे मृतमुह्यमानम्
सूतः कुमारश्च ददर्श नान्यः ॥ ५४ ॥

PROSE ORDER :—ततः राजपुत्रे तथा गच्छति (सति) तैः एव देवैः मार्गे, गतासुः (नरः) विहितः। सूतः कुमारः च मृतम् तम् एव मार्गे उह्यमानं ददर्श। अन्यः न ददर्श।

HINDI TRANSLATION :—इस प्रकार राजपुत्र के जाते समय, उन्हीं देवताओं द्वारा एक प्राणहीन (शरीर) मार्ग में रख दिया गया। सारथि और कुमार ने उसी मरे हुए को मार्ग में ढोये जाते हुए देखा। (किसी) दूसरे ने नहीं देखा।

ENGLISH TRANSLATION :—Then the prince having set out in that way, a lifeless man was placed (on the road) by the selfsame gods. The charioteer and the prince saw the very man being borne on the road. No one else (saw him).

PURPORT IN SANSKRIT :—यदा राजपुत्रः गच्छन्नासीत्, तदा तैः एव देवैः एकं प्राणरहितं पुरुषं विरच्य मार्गे स्थापितमभूत्। राजपुत्र सारथिश्च तं मृतं पुरुषं चतुर्भिः बान्धवैः श्मशानं नीयमानमपश्यताम्।

METRE :—उपजाति।

NOTES

राजपुत्रे तथा गच्छति—जब राजपुत्र इस प्रकार चले जा रहे थे', while the prince was going in that way. भावे सप्तमी। गच्छति—गम् धातु+शतृ प्रत्यय, सप्तमी एक वचन पुंलिङ्ग। तैः एव देवैः :—यैः पूर्वं वृद्धरोगिणौ प्रेषितौ, उन्हीं देवों द्वारा जिन्होंने पहिले एक वृद्ध और एक रोगी को भेजा था, by the selfsame gods as had previously sent an old man and a diseased man. गतासुः—असु means "प्राण life, गता (गताः) असवः (प्राणाः) यस्य स गतासुः (बहुव्रीहि), गतप्राणः, जिसके प्राण निकल गये थे, whose life had departed, lifeless. विहितः—कृतः, बनाया गया, वि+धा+क्त। मृतम्—मरे हुए dead, मृ+क्त। उह्यमानम्—नीयमानम्, ढोया जाता हुआ, ले जाया जाता हुआ, being borne, being carried, वह्+कर्मणि शानच्, द्वितीया एकवचन, पुंलिङ्ग, इसका विशेष्य है "तम्"।

अथाब्रवीद्राजसुतः स सूतं
नरैश्चतुर्भिर्ह्रियते क एषः।
दीनैर्मनुष्यैरनुगम्यमानो
यो भूषितोऽश्वास्यवरुध्यते च॥ ५५॥

"श्वासिन्", माने "सांस लेने वाला", "अश्वासिन्" माने "न सांस लेने वाला"। अश्वासी अश्वासिनौ अश्वासिनः। अश्वासिनम् अश्वासिनौ अश्वासिनः इत्यादि। "श्वस्" धातु से "णिनि" प्रत्यय = श्वासिन्। न श्वासी इति अश्वासी (नञ् तत्पुरुष)। अवस्तीर्यते—वेष्ट्यते वस्त्रादिभिः, ढका हुआ है, is covered.. अव+स्तॄ धातु, passive voice, present tense, third person, singular number.

ततः स शुद्धात्मभिरेव देवैः
शुद्धाधिवासैरभिभूतचेताः ।
अवाच्यमप्यर्थमिमं नियन्ता
प्रव्याजहारार्थविदीश्वराय ॥ ५६ ॥

OSE ORDER :—ततः शुद्धात्मभिः शुद्धाधिवासैः देवैः एव अभिभूतचेताः अर्थवित् स नियन्ता अवाच्यम् अपि इमम् अर्थम् ईश्वराय प्रव्याजहार।

NDI TRANSLATION :—तब शुद्ध अन्तःकरण वाले तथा शुद्ध निवासस्थान वाले देवताओं द्वारा जिसका चित्त प्रभावित कर दिया गया था और जो सारा मतलब समझता था उस सारथि ने ईश्वर (सिद्धार्थ) से यह बात बता दी यद्यपि यह बात गुप्त रखने योग्य थी।

NGLISH TRANSLATION :—Then the charioteer whose mind had been influenced by the gods who had pure souls, and whose abodes were sacred—the charioteer who was conversant with the meaning (of things), told the prince this truth, although it should not have been disclosed.

PURPORT IN SANSKRIT:—यद्यपि सारथिः सर्वज्ञोऽभूत् तथापि शुद्धान्तःकरणैः पवित्रस्थाननिवासिभिः देवैः पराभूतान्तःकरणस्य सारथेर्मतिर्भिन्ना संजाता। स राजकुमारम् इदम् अर्थमकथयत् यद्यप्ययमर्थो गोपनीय आसीत् यतोऽयमर्थो वैराग्योत्पादक आसीत्।

METRE:—उपजाति।

NOTES.

शुद्धात्मभिः—शुद्ध, holy, pure. शुद्धः आत्मा येषां ते शुद्धात्मानः तैः शुद्धात्मभिः (बहुव्रीहि), जिनकी आत्माएँ शुद्ध (पवित्र) थीं उन देवों द्वारा' (by the gods) whose souls were pure. शुद्धाधिवासैः—अधिवास, निवासस्थान, abode, residence. शुद्धः अधिवासो येषां ते शुद्धाधिवासाः तैः शुद्धाधिवासैः (बहुव्रीहि), जिन देवों का निवासस्थान पवित्र था, उन देवों द्वारा, (by the gods) whose abodes were sacred. अभिभूतचेताः—अभिभूत, प्रभावित, influenced. चेतस् mind. अभिभूतं चेतः यस्य सः अभिभूतचेताः (बहुव्रीहि) जिस (सारथि) का चित्त प्रभावित कर दिया गया था, जिस सारथि के चित्त पर शुद्ध आत्मा वाले तथा शुद्ध निवास स्थान वाले देवताओं ने अपना प्रभाव डाल दिया था, वह सारथि whose heart had been influenced by the pure-hearted (pure-minded) gods residing in holy places. अर्थवित्—अर्थज्ञ, अर्थ जानने वाला, जो सारा मतलब समझता था, he who knew (understood) the meaning of every thing; qualifying the charioteer. नियन्ता—सारथि, charioteer. अवाच्यम्—अकथनीयम्, गोपनीयम्, that which should not have been told; that which should

have been kept secret. इमम् अर्थम्—इस बात को, this matter, this truth. प्रियाय—प्रियाय, गौतमाय, राजकुमाराय, to the prince. अभ्याजहार—कथयामास, कह दिया, disclosed, revealed.

बुद्धीन्द्रियप्राणगुणैर्वियुक्तः
सुप्तो विसंज्ञस्तृणकाष्ठभूतः ।
संबध्य संरक्ष्य च यत्नवद्भिः
प्रियाप्रियैस्त्यज्यत एष कोऽपि ॥ ५७ ॥

PROSE ORDER :—बुद्धीन्द्रियप्राणगुणैः वियुक्तः तृणकाष्ठभूतः विसंज्ञः सुप्तः एष कोऽपि यत्नवद्भिः प्रियाप्रियैः संबध्य संरक्ष्य च त्यज्यते ।

HINDI TRANSLATION :—बुद्धि, इन्द्रिय, प्राण और गुणों से रहित, तिनका और लकड़ी के समान, चेतनाहीन, सोया हुआ यह कोई मनुष्य प्रयत्नपरायण मित्रों और शत्रुओं द्वारा बाँध कर और बचाकर छोड़ा जा रहा है ।

ENGLISH TRANSLATION :—He is someone who is devoid of intellect, senses, life, and qualities; who has (now) become like a straw and wood; who lies unconscious, and asleep, and who, after being tied and protected, is being deserted by striving friends and foes.

PURPORT IN SANSKRIT :—इदानीम् अस्मिन् बुद्धिर्नास्ति; चक्षुरादीनीन्द्रियाण्यप्यस्य नष्टानि, असौ प्राणहीनो वर्तते, न कोऽपि गुणोऽस्मिन् विद्यते। असौ तृणवत् काष्ठवत् च निर्जीवः संजातः। चेतनाशक्तिरप्यस्य नष्टा। असौ अनन्तां निद्रां प्राप्तः, मृत इति शेषः। मित्राणि शत्रवश्चामुं रज्जुभिः

[illegible]

NOTES

[illegible] intellect, brain [illegible] practice [illegible]

द्वारा, हितों और अहितों द्वारा. by friends and foes

संबध्य—बांधा जाकर, लाश को पतली रस्सी (सुतली) से अर्थी में बांध देते हैं ताकि ले चलते समय लाश हिले डुले नहीं। सम् + बन्ध् धातु + ल्यप् प्रत्यय. having been fastened.

संरक्ष्य—शृगालादिभ्यः शवस्य रक्षां कृत्वा, शृगालादयो मा एनं भक्षयेयुः इति शवस्य रक्षां कृत्वा, बचाकर, अर्थात् गीदड़ या सियार कहीं लाश को न खा जायें इसलिये उसकी रक्षा करके having been protected. सम् + रक्ष् धातु + ल्यप् प्रत्यय।

त्यज्यते—छोड़ा जा रहा है (श्मशान में), is being abandoned, is being forsaken

इति प्रणेतुः स निशम्य वाक्यं
स चुक्षुभे किंचिदुवाच चैनम्।
एकाकिनस्त्वेव जनस्य नाशः
सर्वप्रजानामयमीदृशोऽन्तः ॥ ५८ ॥

Prose Order :—इति प्रणेतुः वाक्यं निशम्य सः चुक्षुभे। सः च एनं किंचित् उवाच—" किम् एकाकिनः जनस्य तु एव नाशः, (अथवा) सर्वप्रजानाम् अन्तः ईदृशः।

Hindi Translation :—सारथि की इस बात को सुनकर वह (राजकुमार) घबरा गया और उससे (सारथि से) कुछ कहने लगा, " अकेले इसी आदमी का नाश हुआ, अथवा मनुष्यमात्र का अन्त इसी प्रकार होता है "।

English Translation :—He (the prince) got perturbed on hearing these words of the driver, and said to him something (like this), "Is it the destruction of this single man, or is such the end of all mankind ?"

Purport in Sanskrit :—सूतस्य वचनं श्रुत्वा राजकुमारस्य मनसि महानुद्वेगोऽभवत् । अतः स तमुवाच, "किमेष एकस्य मनुष्यस्यायं नाशः, अथवा सर्वे प्राणिनः एवमेव नश्यन्ति" ।

Metre :—उपजाति ।

NOTES.

प्रणेतुः—सूतस्य, सारथेः, सारथि की, of the charioteer. प्रणेता प्रणेतारौ प्रणेतारः । प्रणेतारम् प्रणेतारौ प्रणेतॄन् इत्यादि रूप चलेंगे । निशम्य—श्रुत्वा, सुनकर, having heard, नि+शम् धातु+ल्यप् प्रत्यय । चुक्षुभे—क्षुब्धो बभूव, उद्विग्नो बभूव, घबरा गया, व्याकुल हो गया, became agitated, grew perturbed. क्षुभ् धातु (to be agitated) लिट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन । सः—राजकुमारः । एनम्—सूतम् । किमिदम्—? एकाकिनः—अकेला, alone. 'एकाकिन्' मूल शब्द है, एकाकी एकाकिनौ एकाकिनः । एकाकिनम् एकाकिनौ एकाकिनः एकाकिना एकाकिभ्याम् एकाकिभिः इत्यादि । यहाँ पर "एकाकिनः" षष्ठी का एकवचन है और "जनस्य" की विशेषण बनाता है । नाशः—destruction, नश्+घञ् । सर्वप्रजानाम्—सर्वाश्च ताः प्रजाः इति सर्वप्रजाः (कर्मधारय) तासाम् सर्वप्रजानाम्, सभी प्राणियों का, of all living beings, of all mankind. ईदृशः—इसी प्रकार का, such, similar

ततः प्रणेता वदति स्म तस्मै
सर्वप्रजानामिदमन्तकर्म ।
हीनस्य मध्यस्य महात्मनो वा
सर्वस्य लोके नियतो विनाशः ॥ ६१ ॥

Prose Order :— ततः प्रवेता तस्मै वदति स्म, " अयं सर्वप्रजानाम् अन्तकर्ता । लोके हीनस्य, मध्यस्य महात्मनः वा सर्वस्य विनाशः नियतः । "

Hindi Translation :—तब सारथि ने उनसे (राजकुमार से) कहा, " यह सभी मनुष्यों का नाश करने वाला है । (इस) संसार में नीच का, बीच वाले का, महात्मा का—सभी का नाश अवश्यंभावी है ।"

English Translation :—Then the charioteer said to him, " This is the destroyer of all mankind. In this world, the destruction of everyone—the low, the mediocre, and the high-souled—is inevitable. "

Purport in Sanskrit :—सारथिः कुमारमवदत् " सर्वे मनुष्याः अनेन नाश्यन्ते । अस्मिन् संसारे सर्वेषां प्राणिनां नाशः ध्रुवः । मृत्युरिदं न विचारयति " अयं निकृष्टः, अयं मध्यमः, अयम् उत्तमः " इति ।

Metre :—उपजाति ।

NOTES.

अन्तकर्ता—करोतीति कर्ता, अन्तस्य (नाशस्य) कर्ता इति अन्तकर्ता (षष्ठी तत्पुरुष), destroyer. लोके—अस्मिन् संसारे, इस संसार में, in this world. हीनस्य—नीच का, of the low. मध्यस्य—मध्यमश्रेण्यां स्थितस्य, यो नातिनीचः नात्युच्चः स मध्यमः, मध्यम हैसियत वाले का, बीच की हैसियत वाले का, of the mediocre. महात्मनः—महान् (great, high) आत्मा (soul) यस्य स महात्मा तस्य महात्मनः (बहुव्रीहि) महात्मा का, of the high-souled. महात्मा महात्मानौ महात्मानः । महात्मानम् महात्मानौ महात्मनः । महात्मना

महात्मभ्याम् महात्मभिः इत्यादि रूप चलेंगे। यहाँ पर "महात्मन" षष्ठी का एक वचन है। सर्वस्य—अखिलस्य, सब का, of all. विनाशः—नाश, destruction, वि+नश् धातु+घञ् प्रत्यय। नियतः—ध्रुवः, निश्चितः, अवश्यम्भावी, sure, certain, inevitable.

ततः स धीरोऽपि नरेन्द्रसूनुः
श्रुत्वैव मृत्युं विषसाद सद्यः।
अंसेन संश्लिष्य च कूबराग्रं
प्रोवाच निर्ह्रादवता स्वरेण ॥ ६० ॥

Prose Order :—ततः धीरः अपि सः नरेन्द्रसूनुः मृत्युं श्रुत्वा एव सद्यः विषसाद, अंसेन च कूबराग्रं संश्लिष्य निर्ह्रादवता स्वरेण प्रोवाच।

Hindi Translation :—यद्यपि राजकुमार धैर्यवान थे, तथापि मृत्यु को सुनते ही वे शीघ्र दुःखित हो गये, और रथ के धुरे के अग्र भाग को कन्धे से लगाकर (सहारा लेकर) गम्भीर (ध्वनिपूर्ण) स्वर से बोले।

English Translation :—Then the prince, although resolute, became dejected immediately on hearing of death, and embracing the fore-part of the pole of the chariot with his shoulder, spoke in a grave tone

Explanation in Sanskrit :—यद्यपि राजकुमारः धैर्यशील आसीत्, तथापि मृत्युं श्रुत्वैव खिन्नः अभवत्, स्कन्धेन च रथस्य कूबराग्रभागमवलम्ब्य गम्भीरेण स्वरेण प्रोवाच।

Metre :—उपजातिः।

PROSE ORDER :—इयं च प्रजानां निष्ठा नियतं (अवश्यं) प्रमाद्यति । लोकः च त्यक्तभयः । नृणां मनांसि कठिनानि (इति) शंके तथाहि अध्वनि स्वस्थाः वर्तमानाः ।

HINDI TRANSLATION :—लोगों का यह विश्वास अवश्य ही ग़लत है । संसार ने भय त्याग दिया है । मैं सन्देह करता हूँ कि मनुष्यों का मन कठिन है, इसीलिये तो वे रास्ते में (बिल्कुल) निश्चिन्त (बेख़बर) खड़े हैं ।

ENGLISH TRANSLATION :—This faith of the people is surely mistaken; the world has given up all fear. I apprehend that the minds of men are harsh, for they are standing unconcerned on the road.

PURPORT IN SANSKRIT :—लोकस्य योऽयं विश्वासः यत् "नाहं मरिष्ये" स मिथ्या । लोकः मरणसम्बन्धि-भयरहितः संजातः । अहं तु मन्ये यत् जनानां मनांसि कठोराणि जातानि, अतएव ते निश्चिन्ता भूत्वा मार्गे तिष्ठन्ति ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

निष्ठा—faith, confidence (Apte's Dictionary) नियतम्—(अव्यय), अवश्यमेव, ध्रुवम्, certainly, surely. प्रमाद्यति—is mistaken. त्यक्तभयः—भय is neuter gender (Apte's Dictionary) त्यक्त, given up, abandoned, त्यक्तं भयं येन सः त्यक्तभयः (बहुव्रीहि), जिसके द्वारा भय त्याग दिया गया है, by whom fear has been given up. नृणां—मनुष्याणाम्, मनुष्यों के, of men. मूल शब्द 'नृ' है । 'नृ' माने 'मनुष्य' । षष्ठी बहु वचन

PROSE ORDER :—इयं च प्रजानां निष्ठा नियतं (अवश्यं) प्रमाद्यति । लोकः च त्यक्तभयः । नृणां मनांसि कठिनानि (इति) शंके तथाहि अध्वनि स्वस्थाः वर्तमानाः ।

HINDI TRANSLATION :—लोगों का यह विश्वास अवश्य ही ग़लत है । संसार ने भय त्याग दिया है । मैं सन्देह करता हूँ कि मनुष्यों का मन कठिन है, इसीलिये तो वे रास्ते में (बिल्कुल) निश्चिन्त (बेख़बर) खड़े हैं ।

ENGLISH TRANSLATION :—This faith of the people is surely mistaken; the world has given up all fear. I apprehend that the minds of men are harsh; for they are standing unconcerned on the road.

PURPORT IN SANSKRIT :—लोकस्य योऽयं विश्वासः यत् "नाहं मरिष्ये" स मिथ्या । लोकः मरणसम्बन्धि-भयरहितः संजातः । अहं तु मन्ये यत् जनानां मनांसि कठोराणि जातानि, अतएव ते निश्चिन्ता भूत्वा मार्गे तिष्ठन्ति ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

निष्ठा—faith, confidence (Apte's Dictionary) नियतम्—(अव्यय), अवश्यमेव, ध्रुवम्, certainly, surely. प्रमाद्यति—is mistaken. त्यक्तभयः—भय is neuter gender (Apte's Dictionary) त्यक्त, given up, abandoned, त्यक्तं भयं येन सः त्यक्तभयः (बहुव्रीहि), जिसके द्वारा भय त्याग दिया गया है, by whom fear has been given up. नृणां—नराणाम्, मनुष्यों के, of men. मूल शब्द 'नृ' है । 'नृ' माने 'मनुष्य' । षष्ठी बहु वचन

...]" तथा " मृयाम् " दो रूप होते हैं। मनांसि—
minds. अध्वनि—मार्गे, मार्ग में, in the way,
road. मूल शब्द " अध्वन् " है (पुंलिङ्ग), अध्वा
अध्वानः, अध्वानम् अध्वानौ अध्वनः, अध्वना
...म् अध्वभिः इत्यादि रूप चलेंगे। " अध्वनि "
एक वचन है। स्वस्थाः—calm, unagitated,
...cerned. वर्तमानाः—exist, remain. वृत्+शानच्।

तस्मादयः सूत निवर्ततां नो
विहार योग्यौ न हि देशकालौ ।
जानन् विनाशं कथमार्तिकाले
सचेतनः स्यादिह हि प्रसक्तः ॥ ६२ ॥

...ROSE ORDER :—तस्मात्, (हे) सूत नः रथः निवर्तताम्।
हि देशकालौ विहारयोग्यौ न। आर्तिकाले विनाशं जानन्
(अपि), सचेतनः कथम् इह प्रसक्तः स्यात्।

HINDI TRANSLATION :—इस कारण, हे सूत, हमारा रथ
लौट जाय। स्थान और समय कुछ भी हमारे भ्रमण के
योग्य नहीं है। (इस) कष्टपूर्ण काल के अन्दर (जो
विनाश भरा हुआ है उस) विनाश को जानते हुए भी
ज्ञानी पुरुष इसमें भला कैसे आसक्त हो सकता है।

ENGLISH TRANSLATION :—Therefore, O charioteer, let
my chariot, turn back, because neither the place
...he time is suitable for my journey. How
...t man indulge in this, when he
... in this miserable

of the king. ब्रुवाणे—कथयति, कहने पर, ब्रू धातु+शानच् प्रत्यय, पुलिंग सप्तमी एक वचन । सः—सूतः । तं रथं—उस रथ को, that chariot. न एव निवर्तयामास—नहीं लौटाया, did not turn back. नरेन्द्रशासनात्—नराणाम् इन्द्रः इति नरेन्द्रः (षष्ठी तत्पुरुष), नरेन्द्रस्य शासनम् इति नरेन्द्रशासनम् तस्मात् नरेन्द्रशासनात् (षष्ठी तत्पुरुष) राजाज्ञया, according to the king's order. विशेषयुक्तम्—विशेष, speciality. विशेषैः युक्तम् इति विशेषयुक्तम् (तृतीया तत्पुरुष), आकर्षणविशेषैः परिपूर्णम् खास खास बातों से भरा हुआ full of specialities. This adjective qualifies the noun. " वनम् "। सपद्मषण्डम्—पद्म, कमल, lotus, पद्मषण्डम्, a collection of lotuses, a multitude of lotuses. विद्यमानं पद्मषण्डं यस्मिन् तत् सपद्मषण्डम् (बहुव्रीहि), qualifying " वनम् "। सपद्मषण्डं वनम्—a grove containing a collection of lotuses. निर्ययौ—निर्जगाम, गया, went to.

> ततः शिवं कुसुमितबालपादपं
> परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलम् ।
> विमानवत्सकमलचारुदीर्घिकम्
> ददर्श तद्वनमिव नन्दनं वनम् ॥६४॥

Prose Order :—ततः शिवं कुसुमितबालपादपं परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलं विमानवत् सकमलचारुदीर्घिकं नन्दनं वनम् इव तद्वनं ददर्श ।

Hindi Translation :—तब उन्होंने आनन्दप्रद उस बगीचे को देखा—उस (बगीचे) में फूले हुए छोटे छोटे

वृक्ष लगे थे, मस्त तथा मतवाली कोयलें (इधर उधर) उड़ रही थीं, जलाशय विद्यमान थे, कमलों से भरी हुई सुन्दर झीलें (बावलियाँ) थीं।

English Translation :—Then he saw the pleasant grove which resembled the Nandan garden (Indra's garden); which contained blossoming young plants; which abounded with infatuated gay cuckoos flying about; which had pools of water, and beautiful lakes (wells) full of lotuses.

Purport in Sanskrit :—तदनन्तरं कुमारो वनमेकमति सुखकरमपश्यत्। कीदृशं तद्वनमिति वर्णयति। नन्दनवनतुल्यम्, यादृशं सुखं नन्दनवनदर्शनेनाप्यते तादृशं सुखमस्यापि दर्शनेन अभूत्। तस्मिन् वने बहवः प्रफुल्लिताः लघुवृक्षाः शुशुभिरे, इतस्ततो डयमानाः आनन्दपरिप्लुता उन्मत्ताः कोकिला ददृशिरे, जलाशयाश्चापि तत्र भूरिशो ऽभवन्, कमलपरिपूर्णाः कासाराश्चास्मिन्देशेऽशोभन्त।

Metre :—रुचिरा।

NOTES.

शिवम्—सुखकरम्, कल्याणकरम्, auspicious, pleasant; this adjective qualifies the noun वनम्। कुसुमितबालपादपम्—कुसुमित, प्रफुल्लित, blossoming, flowering, फूले हुए। कुसुमानि संजातानि येषाम् इति कुसुमिताः, कुसुम + इतच्, "तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच्" सूत्र के द्वारा "इतच्" प्रत्यय हुआ। बाल—छोटा, लघु, छोटे छोटे, small, young. पादप—वृक्ष, पेड़, trees, बालाश्च ते पादपाश्च इति बालपादपाः (कर्मधारय), छोटे छोटे वृक्ष, young plants.

of the king. ब्रुवाणे—कथयति, कहने पर, ब्रू धातु+शानच् प्रत्यय, पुंलिंग सप्तमी एक वचन। सः—सुतः। तं रथं—उस रथ को, that chariot. न एव निवर्तयामास—नहीं लौटाया, did not turn back. नरेन्द्रशासनात्—नराणाम् इन्द्रः इति नरेन्द्रः (षष्ठी तत्पुरुष), नरेन्द्रस्य शासनम् इति नरेन्द्रशासनम् तस्मात् नरेन्द्रशासनात् (षष्ठी तत्पुरुष) राजाज्ञया, according to the king's order. विशेषयुक्तम्—विशेष, speciality. विशेषैः युक्तम् इति विशेषयुक्तम् (तृतीया तत्पुरुष), आकर्षणविशेषैः परिपूर्णम् खास खास बातों से भरा हुआ full of specialities. This adjective qualifies the noun. "वनम्"। सपद्मखण्डम्—पद्म, कमल, lotus, पद्मखण्डम्, a collection of lotuses, a multitude of lotuses. विद्यमानं पद्मखण्डं यस्मिन् तत् सपद्मखण्डम् (बहुव्रीहि), qualifying "वनम्"। सपद्मखण्डं वनम्—a grove containing a collection of lotuses. निर्ययौ—निर्जगाम, गया, went to.

ततः शिवं कुसुमितबालपादपं
परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलम्।
निपानवत्सकमलचारुदीर्घिकम्
ददर्श तद्वनमिव नन्दनं वनम् ॥६४॥

Prose Order :—ततः शिवं कुसुमितबालपादपं परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलं निपानवत् सकमलचारुदीर्घिकं नन्दनं वनम् इव तद्वनं ददर्श।

Hindi Translation :—तब उन्होंने नन्दनवन तुल्य उस बगीचे को देखा—उस (बगीचे) में फूले हुए छोटे छोटे

फूल लगे थे, प्रसन्न तथा मतवाली कोयलें (इधर उधर) उड़ रही थीं, जलाशय विद्यमान थे, कमलों से भरी हुई सुन्दर झीलें (बावलियां) थीं।

NGLISH TRANSLATION :—Then he saw the pleasant grove which resembled the Nandan garden (Indra's garden); which contained blossoming young plants; which abounded with infatuated gay cuckoos flying about; which had pools of water, and beautiful lakes (wells) full of lotuses.

PURPORT IN SANSKRIT :—तदनन्तरं कुमारो वनमेकमति सुखकरमपश्यत्। कीदृशं तद्वनमिति वर्णयति। नन्दनवन-तुल्यम्, यादृशं सुखं नन्दनवनदर्शनेनाप्यते तादृशं सुख-मस्यापि दर्शनेन अभूत्। तस्मिन् वने बहवः प्रफुल्लिताः लघुवृक्षाः शुशुभिरे, इतस्ततो भ्रममाणाः आनन्दपरिप्लुता उन्मत्ताः कोकिला ददृशिरे, जलाशयाश्चापि तत्र भूयिष्ठो ऽभवन्, कमलपरिपूर्णाः कासारास्तत्राभेदेऽशोभन्त।

METRE :—रुचिरा।

NOTIS.

शिवम्—सुखकरम्, कल्याणकरम्, auspicious, pleasant; this adjective qualifies the noun वनम्। कुसुमितबाल-पादपम्—कुसुमित, प्रफुल्लित, blossoming, flowering, फूले हुए, कुसुमानि संजातानि यस्य सः इति कुसुमिताः, कुसुम+ इतच्, "तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच्" सूत्र के द्वारा "इतच्" प्रत्यय हुआ। बाल—लघवः, लघु, छोटे छोटे, small, young. पादप—वृक्ष, पेड़, trees, बालाश्च ते पादपाश्च इति बालपादपाः (कर्मधारय), छोटे छोटे वृक्ष, young plants.

कुसुमिताः बालपादपाः यस्मिन् तत् कुसुमितबालपादपम् (बहुव्रीहि), यह शब्द द्वितीया विभक्ति का एक वचन है. "वनम्" का विशेषण है, इसका अर्थ है "वह वन जिसमें फूले हुए छोटे छोटे वृक्ष लगे थे, which contained blossoming young plants." परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलम्—परिभ्रमत्, भ्रमण करती हुई, उड़ती हुई, flying about, परि + भ्रम् धातु + शतृ प्रत्यय। प्रमुदित—आनन्दित, प्रहृष्ट, cheerful, gay. मत्त—intoxicated (Apte's Dictionary). मत्ताश्च ते कोकिलाश्च इति मत्तकोकिलाः (कर्मधारय), मतवाली कोयलें, intoxicated cuckoos. प्रमुदिताश्च मत्तकोकिलाश्च इति प्रमुदितमत्तकोकिलाः (कर्मधारय), प्रसन्न और मतवाली कोयलें, gay and intoxicated cuckoos. परिभ्रमन्तः प्रमुदितमत्तकोकिलाः यस्मिन् तत् वनम् परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलम् (बहुव्रीहि), "वनम्" का विशेषण है। इसका अर्थ हुआ "जिसमें प्रसन्न और मतवाली कोयलें उड़ रही थीं, in which gay and intoxicated cuckoos were flying about." निपानवत्—निपान means "pool of water" आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये इत्यमरः। निपानानि सन्ति अस्य इति निपानवत्, अर्थात् जलाशयों वाला जलाशयों से युक्त, full of pools of water. निपान शब्द। "निपानवत्" द्वितीया का एक वचन है, "वनम्" का विशेषण है। निपानवत् [illegible]। सकमलचारुदीर्घिकम्—दीर्घिका बावली, तालाब, बावड़ी, pond like, चारु—सुन्दर, beautiful, कमलयुक्त कमल के सहित, कमल से भरा हुआ, full of lotuses. दीर्घिकाभिः [illegible] (बहुव्रीहि), सकमलाश्च चारवः दीर्घिकाश्च इति सकमलदीर्घिकाः

कर्मधारय), सुन्दर झीलें या बावलियाँ, beautiful lakes · wells. सकमलाः चारुदीर्घिकाः यस्मिन् तत् सकमलचारु-र्घिकम् (बहुव्रीहि), "वनम्" का विशेषण है जिसमें कमलों से भरी हुई सुन्दर झीलें (बावलियाँ) थीं, which had beautiful lakes (wells) full of lotuses. नन्दनं वनम् इव—"नन्दनवन" इन्द्र के बगीचे का नाम है, "Nandan" is the name of Indra's garden. नन्दनं वनम् इव—नन्दन वनतुल्यं तत् उद्यानम्, नन्दनवनतुल्य उस बगीचे को, which resembled the Nandan garden.

वरांगनागणकलिलं नृपात्मज-
स्ततो बलाद्वनमभिनीयते स्म तत्
वराप्सरोन्वितमलकाधिपालयम्
नवव्रतो मुनिरिव विघ्नकातरः ॥६५॥

PROSE ORDER :—ततः वराप्सरोन्वितम् अलकाधिपालयं नवव्रतः विघ्नकातरः मुनिः इव नृपात्मजः तत् वरांगना-गणकलिलं वनं बलात् अभिनीयते स्म ।

HINDI TRANSLATION :—जिस प्रकार नया व्रत (संयम) वाला तथा विघ्नों से भयभीत मुनि, सुंदर अप्सराओं से भरे हुए कुबेर के घर में पहुँचाया जावे, उसी प्रकार सुन्दर स्त्रियों के समूह से परिपूर्ण बगीचे में राजकुमार ज़बरदस्ती पहुँचाए गए ।

ENGLISH TRANSLATION :—Just as a sage who, having recently undertaken a vow, is afraid of obstacles, is escorted to the abode of Kuber, which is full of ... Apsarasas, in the same way the .

कुसुमिताः बालपादपाः यस्मिन् तत् कुसुमितबालपादप (बहुव्रीहि), यह शब्द द्वितीया विभक्ति का एक वचन "वनम्" का विशेषण है, इसका अर्थ है "वह वन जिस फूले हुए छोटे छोटे वृक्ष लगे थे, which contained blossomin young plants." परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलम्—परिभ्रमत् भ्रमण करती हुई, उड़ती हुई, flying about, परि+भ्रम् धा +शतृ प्रत्यय। प्रमुदित—आनन्दित, प्रहृष्ट, cheerful, gay मत्त—intoxicated (Apte's Dictionary). मत्ताश्च कोकिलाश्च इति मत्तकोकिलाः (कर्मधारय), मतवाली कोयलें intoxicated cuckoos. प्रमुदिताश्च मत्तकोकिलाश्च इति प्रमुदित मत्तकोकिलाः (कर्मधारय), प्रसन्न और मतवाली कोयलें, gay and intoxicated cuckoos. परिभ्रमन्तः प्रमुदितमत्त कोकिलाः यस्मिन् तत् वनम् परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलम् (बहुव्रीहि), "वनम्" का विशेषण है। इसका अर्थ हुआ "जिसमें प्रसन्न और मतवाली कोयलें उड़ रही थीं, in which gay and intoxicated cuckoos were flying about." निपानवत्—निपान means "pool of water" आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये इत्यमरः। निपानानि विद्यन्ते अस्य, इति निपानवत्, अर्थात् जलाशयों वाला, जलाशयों से युक्त, full of pools of water. निपान+मतुप्। "निपानवत्" द्वितीया का एक वचन है, "वनम्" का विशेषण है। निपानवत् निपानवती निपानवन्ति इत्यादि नपुंसक लिंग में रूप चलेंगे। सकमलचारुदीर्घिकम्—दीर्घिका वापी, कासार, बावली, झील, lake. चारु—सुन्दर, beautiful. सकमला—कमल के सहित, कमल से भरा हुआ, full of lotuses. विद्यमानानि कमलानि यस्मिन् सा सकमला (बहुव्रीहि), चारवश्चता: दीर्घिकाश्च अथवा चार्व्यश्च ताः दीर्घिकाश्च इति चारुदीर्घिकाः

नम् अलकाधिपालयम् (षष्ठी तत्पुरुष) ' आलय ' is both masculine and neuter. अलकाधिपालयम्—अलका के स्वामी का घर, अर्थात् कुबेर का घर, the abode of the lord of Alaka, *i. e.*, the abode of Kuber. नवव्रतः—नव, नया, हाल का, new recent. नवः व्रतः (व्रतम्, यह शब्द पुंलिङ्ग तथा नपुंसक दोनों है) यस्य स नवव्रतः (बहुव्रीहि), जिसका व्रत अभी नया ही हो, जिसने अभी हाल ही में व्रत ठाना हो, whose vow is recent, who undertook vow very recently. विघ्नकातरः—विघ्न, बाधा, obstacles. कातर—afraid. विघ्नैः कातरः इति विघ्नकातरः (तृतीया तत्पुरुष), विघ्नों से भयभीत, afraid of obstacles. जो मुनि हाल ही में व्रत लिये रहता है वह बहुत डरता है कि सांसारिक प्रलोभन मेरी तपश्चर्या में बाधा न डाल दें, कहीं मैं सुन्दर स्त्रियों तथा अन्य भोगविलास के साधनों से चलायमान न हो जाऊँ कि मेरी तपस्या में विघ्न पड़ जाय।

वरांगनागणकलितम्—अंगना, स्त्री, women, ladies; गण, समूह, multitude कलित, व्याप्त full of (Apte's Dictionary) वराश्चताः अंगनाश्च इति वरांगनाः (कर्मधारय) सुन्दर स्त्रियाँ, beautiful women. वरांगनानां गणः इति वरांगनागणः (षष्ठी तत्पुरुष), सुन्दर स्त्रियों का समूह, multitude of beautiful women. वरांगनागणेन कलितम् इति वरांगनागणकलितम् (तृतीया तत्पुरुष), सुन्दर स्त्रियों से भरा हुआ, full of multitudes of beautiful women. बलात्—हठात्, अनिच्छया, इच्छायाम् असत्याम् अपि, ज़बर्दस्ती, इच्छा न होने पर भी। perforce, forcibly. अभिनीयते स्म—प्रापिता, पहुँचाए गए, ले जाये गए, was taken to, was escorted to.

was perforce escorted to the grove which was full of multitudes of handsome women.

Purport in Sanskrit :—यथा कुबेरभवनं नीयमानो नवव्रतो मुनिः "मम तपश्चर्यायां तत्रत्याः सुन्दर्यप्सरसो विघ्नं मा कार्षुः" इति बिभेति तथैव राजकुमारः स्वेच्छाविरुद्धं तस्मिन्नुद्याने अभिनीयते स्म। तत्र तेनाऽनेकाः सुन्दरस्त्रियो अपश्यत्।

Metre :—रुचिरा।

NOTES.

वराप्सरोऽभिवृतम्—वर, श्रेष्ठ, सुन्दर, handsome, lovely, beautiful; अप्सरस्, अप्सराएँ; अभिवृतम्, युक्तम् भरा हुआ, full of; वराश्च ताः अप्सरसश्च इति वराप्सरसः (कर्मधारय) सुन्दर अप्सराएँ, beautiful Apsarases वराप्सरोभिः अभिवृतम् इति वराप्सरोऽभिवृतम् (तृतीया तत्पुरुष), सुन्दर अप्सराओं से भरा हुआ, full of lovely Apsarases. "वराप्सरोऽभिवृतम्" विशेषण है "अलकाधिपालयम्" का। अलकाधिपालयम्—अलका is the name of the abode of Kuber, the lord of the Yakshas. It was supposed to be on one of the peaks of the Himalaya, above the peak of Meru "अलका कुबेरपुर्यामलिन्यां चूर्णकुन्तले" इत्यमरः। Also compare "गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्" —मेघदूत पूर्वमेघ-श्लोक ७। आलयम्—भवन, निवासस्थान, abode, residence. अलकायाः (अलकानगर्याः) अधिपः (स्वामी) इति अलकाधिपः (षष्ठी तत्पुरुष), अलका के स्वामी, अर्थात् कुबेर, the lord of Alaka, i.e., Kuber. अलकाधिपस्य आलयः (आलयम्) इति अलकाधिपालयः

तम् अलकाधिपाश्रयम् (षष्ठी तत्पुरुष) ' आश्रय ' is both masculine and neuter अलकाधिपाश्रयम्—अलका के स्वामी का घर, अर्थात् कुबेर का घर, the abode of the lord of Alaka, i. e., the abode of Kuber नवव्रतः—नव, नया, हाल का, new recent. नवं व्रतः (व्रतम्, यह शब्द पुंलिङ्ग तथा नपुंसक दोनों है) यस्य स नवव्रतः (बहुव्रीहि), जिसका व्रत अभी नया ही हो, जिसने अभी हाल ही में व्रत ठाना हो, whose vow is recent, who undertook vow very recently. विघ्नकातरः—विघ्न, बाधा, obstacles. कातर—afraid. विघ्नैः कातरः इति विघ्नकातरः (तृतीया तत्पुरुष), विघ्नों से भयभीत, afraid of obstacles. जो मुनि हाल ही में व्रत लिये रहता है वह बहुत डरता है कि सांसारिक प्रलोभन मेरी तपस्याओं में बाधा न डाल दें; कहीं मैं सुन्दर स्त्रियों तथा अन्य भोगविलास के साधनों से चलायमान न हो जाऊँ कि मेरी तपस्या में विघ्न पड़ जाय।

वराङ्गनागणकलिलम्—अंगना, स्त्री, women, ladies; गण, समूह, multitude. कलिल, व्याप्त full of (Apte's Dictionary). वराश्च ता अंगनाश्च इति वराङ्गनाः (कर्मधारय) सुन्दर स्त्रियाँ, beautiful women. वराङ्गनानां गणः इति वराङ्गनागणः (षष्ठी तत्पुरुष), सुन्दर स्त्रियों का समूह, multitude of beautiful women. वराङ्गनागणेन कलिलम् इति वराङ्गनागणकलिलम् (तृतीया तत्पुरुष), सुन्दर स्त्रियों से भरा हुआ, full of multitudes of beautiful women. बलात्—हठात्, अनिच्छया, इच्छायाम् असत्याम् अपि, ज़बर्दस्ती, इच्छा न होने पर भी। perforce, forcibly. अभिनीयते स्म—प्रापितः, पहुँचाए गए, ले जाये गए, was taken to, was escorted to.
